वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

फरवरी 01-15, 2025

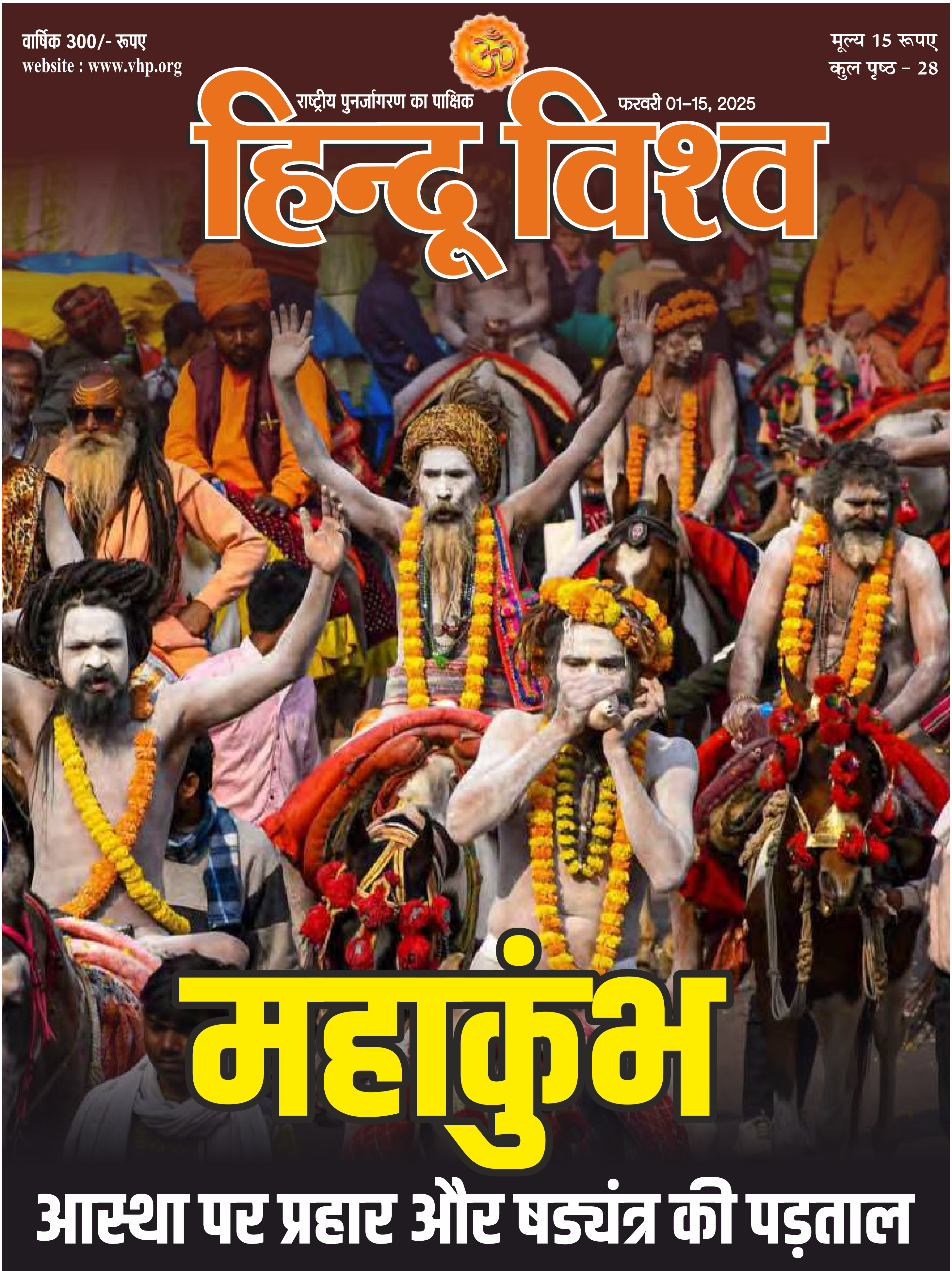

महाकुंभ

आस्था पर प्रहार और षड्यंत्र की पड़ताल

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

प्रयागराज में आयोजित विहिप केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की
बैठक तथा प्रैसवार्ता को संबोधित करते आचार्य म.म. पूज्य अवधेशानंद गिरि जी महाराज

मातृशक्ति – दुर्गा वाहिनी का तीन दिवसीय वर्ग सम्पन्न

विहिप के महाकुंभ शिविर में प्रचार विभाग के कार्यालय का उद्घाटन।

प्रयागराज महाकुंभ के विहिप शिविर में साध्वी सम्मेलन संपन्न

प्रयागराज महाकुंभ के विहिप शिविर में विराट संत सम्मेलन संपन्न

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे अग्निदेव ! आप अंगिराओं में आद्य और शिरोमणि हैं। आप देवताओं के नियमों को सुशोभित करते हैं। आप संसार में व्याप्त तथा दो माताओं वाले दो अरणियों से समुद्भूत होने से बुद्धिमान् हैं। आप मनुष्यों के हितार्थ सर्वत्र विद्यमान रहते हैं।

– ऋग्वेद

01-15 फरवरी, 2025

माघ शुक्ल फाल्गुन कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. - 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. - 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6

रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली-110022-05

दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495

hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

प्रयागराज महाकुम्भ में अखिल भारतीय साध्वी सम्मेलन 05

अध्यात्म, राष्ट्रीय एकता और मानवता का महासंगम : महाकुंभ 08

योगी की 'तपस्या' का महाकुंभ 10

प्रयाग में आयोजित हो रहे महाकुम्भ मेले का आध्यात्मिक एवं आर्थिक महत्व 13

वीर सावरकर कॉलेज के नाम पर विवाद क्यों? 15

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल 17

पीली सरसों का बहुआयामी महत्व 20

भिगोई हुई मूंगफली के चमत्कारी फायदे 22

कुम्भ दुनियाँ का अनोखा उत्सव है : मिलिन्द पराण्डे 23

दुर्गा वाहिनी के अभ्यास वर्ग का शुभारम्भ 24

शक्ति समागम : राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका 25

प्रयाग में विराट संत सम्मेलन 26

सुभाषित

अग्निः शेषं ऋणः शेषं शत्रुः शेषं तथैव च।
पुनः पुनः प्रवर्धेत तस्मात् शेषं न कारयेत।।

अग्नि, ऋण, शत्रु, यदि छोटे अंश में भी शेष रहेगा, तो फिर से विकसित हो जाएगा, अतः इन्हें पूर्णतया समाप्त कर देना चाहिए, ताकि भविष्य में फिर से न पनप सकें।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

महाकुंभः आस्था पर प्रहार और षड्यंत्र की पड़ताल

महाकुंभ भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का जीता–जागता उदाहरण है। यह आयोजन न केवल करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान का केंद्र है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना को भी मजबूत करता है। हर बार की तरह, 2025 का महाकुंभ भी अपनी भव्यता, सुव्यवस्थित प्रशासन और आध्यात्मिक ऊर्जा के कारण विश्वभर में चर्चित है। कुंभ क्षेत्र में आधुनिक तकनीक, सुरक्षा, स्वच्छता और तीर्थयात्रियों की सुविधाओं के लिए किए गए प्रयास सराहनीय हैं। परंतु, इन सबके बावजूद, एक विशेष वर्ग इस दिव्य आयोजन को बदनाम करने का षड्यंत्र रचने में जुटा है।

महाकुंभ में देश–विदेश से करोड़ों श्रद्धालु आ रहे हैं। इस विशाल आयोजन की जटिलता को देखते हुए प्रशासन हर स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहा है। इस वर्ष, आधुनिक तकनीक और व्यवस्थागत सुधारों के चलते महाकुंभ की व्यवस्थाएँ और भी उन्नत हो चुकी हैं। जल की शुद्धता, कुंभ नगरी की सफाई, यातायात की सुगमता और डिजिटल सेवाओं का समावेश इसकी सफलता के प्रमुख आधार हैं। तीर्थयात्रियों की चिकित्सा सुविधाओं, शुद्ध पेयजल, हिन्दू समाज के द्वारा निःशुल्क भोजनालयों की व्यवस्था स्थान–स्थान पर देखने को मिल रही है, निश्चित ही सुरक्षा के प्रबंध इस आयोजन की गरिमा को और बढ़ाते हैं।

इतनी उन्नत व्यवस्थाओं के बावजूद, महाकुंभ को बदनाम करने की कोशिशें हो रही हैं। इन षड्यंत्रों के पीछे अंतर्राष्ट्रीय एवं देशज हिन्दू विरोधी ताकतें कार्यरत हैं, जो भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को नीचा दिखाने में लगी रहती हैं। यह वर्ग प्रायः भारत के धार्मिक आयोजनों को अंधविश्वास, अव्यवस्था और पिछड़ेपन का प्रतीक बताने का प्रयास करता है।

महाकुंभ जैसे आयोजन पर झूठी खबरें फैलाना, व्यवस्थाओं में कमियों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करना और इसे पर्यावरण के लिए हानिकारक बताना इस वर्ग की रणनीति का हिस्सा बन चुका है। यह वर्ग महाकुंभ के सामाजिक और आर्थिक महत्व को अनदेखा करते हुए, इसे एक समस्या के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है।

महाकुंभ की छवि बिगाड़ने में मीडिया के कुछ छद्म पत्रकार भी पीछे नहीं हैं। जहाँ एक ओर कुछ मीडिया संस्थान महाकुंभ की सफलताओं को उजागर करते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ प्लेटफॉर्म इसे केवल विवादों और समस्याओं से जोड़ने का प्रयास करते हैं। सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो और भ्रामक पोस्टों के माध्यम से जनमानस को गुमराह किया जा रहा है। यह सब केवल महाकुंभ के महत्व को कम करने और वैश्विक मंच पर भारत की छवि खराब करने का प्रयास है।

हालाँकि महाकुंभ के यश की दीवार अभेद्य है, जिसे झूठे और भ्रामक तथ्यहीन समाचारों से नहीं भेदा जा सकता है और न ही महाकुम्भ की धवल पताका को मलीन किया जा सकता है। यह भारत की सामूहिक चेतना और उसकी अखंडता का प्रतीक है। यह आयोजन करोड़ों लोगों को एक साथ जोड़ता है और "वसुधैव कुटुंबकम्" के भारतीय आदर्श को साकार करता है। इसके अतिरिक्त, महाकुंभ से लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। छोटे व्यापारियों, कलाकारों और सेवा क्षेत्र के लोगों के लिए यह आयोजन वरदान साबित होता है।

महाकुंभ की व्यवस्थाओं और इसकी सफलता की सच्ची कहानियों को अधिक से अधिक प्रचारित किया जाए। मीडिया और सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग से झूठी खबरों का खंडन किया जा सकता है।

देश के युवाओं को महाकुंभ के महत्व और इसकी परंपराओं से अवगत कराना जरूरी है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है। विभिन्न संगठनों, धार्मिक समूहों और सरकार को मिलकर महाकुंभ को बदनाम करने वाले षड्यंत्रों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, जो भी आरोप लगाए जाएँ, उनका खंडन तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर किया जाए। यह झूठी खबरों को जड़ से समाप्त करने का प्रभावी तरीका है।

देश के युवाओं को महाकुंभ के महत्व और इसकी परंपराओं से अवगत कराना जरूरी है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है।विभिन्न संगठनों, धार्मिक समूहों और सरकार को मिलकर महाकुंभ को बदनाम करने वाले षड्यंत्रों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, जो भी आरोप लगाए जाएँ, उनका खंडन तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर किया जाए। यह झूठी खबरों को जड़ से समाप्त करने का प्रभावी तरीका है।

प्रयागराज महाकुम्भ में अखिल भारतीय साध्वी सम्मेलन

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

अखिल भारतीय साध्वी शक्ति परिषद द्वारा यह सम्मेलन माघ कृष्ण एकादशी, सं 2081 (दिनांक 25 जनवरी 2025) को कुम्भ क्षेत्र के भारद्वाज नगर में विश्व हिन्दू परिषद के महाकुम्भ शिविर में ओल्ड जीटी रोड, झूंसी, प्रयागराज में आयोजित किया गया। मंच पर पूज्य महामण्डलेश्वर मैत्रेई गिरी जी महाराज, पूज्य महामण्डलेश्वर हेमानन्द सरस्वती जी महाराज, मातृशक्ति प्रमुख मीनाक्षी ताई पिशवे, महामण्डलेश्वर निरंजन जी ज्योति, केन्द्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, महामण्डलेश्वर दिव्य चेतना जी, ज्ञानेश्वरी दीदी–जबलपुर, विद्यानन्द गिरी, प्रज्ञा भारती एवं महामण्डलेश्वर अन्नपूर्णा जी उपस्थित थे। मंच संचालन– सरोज सोनी जी, दुर्गा वाहिनी की अखिल भारतीय सह संयोजिका ने किया। इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण व्यवस्था दुर्गा वाहिनी की राष्ट्रीय संयोजिका प्रज्ञा जी महाला एवं सह संयोजिका पिंकी जी पवार ने सम्भाला। कार्यक्रम का आरम्भ श्रीराम, सीता और लक्ष्मण की कांस्य मूर्ति के सामने दीप प्रज्वलन कर के हुआ। अतिथि स्वागत किया गया। सरोज जी ने कहा कि समाज की कुरीतियों, विसंगतियों के समाधान का विचार करने के लिए यह सम्मेलन आयोजित हुआ है। कार्यक्रम की प्रस्तावना करते हुए मीनाक्षी ताई ने कहा कि विहिप संतों के मार्गदर्शन में काम करता है, केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के निर्णयों का क्रियान्वयन करता है, आंदोलन करता है। श्रीराम मंदिर निर्माण हो गया, मथुरा–काशी अभी बाकि है। पंच परिवर्तन पर चर्चा करना है। विवाह संस्था, परिवार संस्था को बचाना है। सामाजिक समरसता बढ़ाना है, सबको जोड़ना है। स्व भाषा, स्वाभिमान को दृढ़ करना है। भारत को गौरवशाली बनाना है। वक्फ बोर्ड भूमि पर कब्जा कर रहा है। हिन्दू जन्मदर का प्रतिशत गिर रहा है। यह सब ठीक करना है।

महामण्डलेश्वर हेमानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हिन्दूओं का रहना कठिन है। लिव इन रिलेशन में संतान का कोई महत्व नहीं होता है। भारतीय सभ्यता संकट में है, आज जनजागृति की आवश्यकता है। कम से कम चार बच्चे पैदा करना पड़ेगा। सही आयु में विवाह न होने पर जन्म देने की क्षमता घट जाती है। ठीक आयु में विवाह हो जाना चाहिए। तलाक हमारी परम्परा नहीं है, हमारा सम्बन्ध सात जन्मों का, आजीवन एक सम्बन्ध का पालन करने वाला देश है यह। 45 वर्ष में विवाह उचित नहीं। हिन्दू जन्मदर 1.3 प्रतिशत है। दूसरों का जन्मदर 2.8 प्रतिशत है। हमारी जनसँख्या घट रही है। जहाँ हमारी जनसंख्या घटी वहाँ इस्लामिक देश बना, इसीलिए हिन्दूओं की जनसँख्या बढ़ाना है। जनसँख्या घटने से मतदाता कम हो जाते हैं, तो अल्पमत की सरकार आती है, निर्णय लेने में कठिनाई होती है। चार संतान उत्पन्न करो– एक संतान किसान हो, एक सैनिक हो, एक माता–पिता की सेवा करे और एक विहिप के काम में लगे।

साध्वी सुप्रिया विकास ठाकुर ताई ने कहा कि लिव इन रिलेशनशीप बड़ी समस्या है। दूसरे धर्म के लोग 15–16 साल की लड़कियों को फांस लेते हैं।

मुसलमान–ईसाई बना लेते हैं। हमारे कथा विद्यालय, महाविद्यालय में करने चाहिए। हिन्दू धर्म ही धर्म है, अन्य कोई धर्म नहीं है। बाकि का आरम्भ हुआ है हमारा सनातन अनादि है, अनंत है। हमारी सँस्कृति बच्चियों को बताना जरूरी है। समान नागरीक कानून लाना चाहिए। उनके नौ बच्चों का भार हिन्दू समाज पर, उनकी नजर हिन्दू समाज की सम्पत्ति पर। दो से अधिक बच्चे ही क्रांति में सहभागी हो सकते हैं।

सूरत से नाथ सम्प्रदाय की मुक्तिनाथ जी ने कहा कि आपके धर्म के ऊपर कोई अंगुली उठाये और आप

सुनते रहो, तो आपकी मृत्यु हो गई, आप जिन्दा लाश हो।

पूज्य साध्वी डॉ राजेश्वरी मैया जी ने कहा कि विधर्मी बढ़ रहे हैं, हिन्दू आबादी घट रही है। विवाह के पहले ब्रह्मचर्य का पालन करना है, इससे दिव्यता बढ़ती है। कम आयु में विवाह आवश्यक है। मैत्री का चलन उचित नहीं।

पूज्य निरंजन जी ज्योति ने कहा कि जीवन में सँस्कारों की बहुत आवश्यकता है। विदेशी ताकतें गलत सँस्कार परोस रही हैं। पाँच भाई बहनों में मैं संत बनी हूँ। पूर्ण बहुमत की सरकार से श्रीराम मंदिर बना, 370 हटा, अनेक निर्णय हुए। राजा दशरथ का एक बेटा होता, तो राम नहीं होते। देवकी के एक ही संतान होने से कृष्ण का मार्ग अवरुद्ध हो जाता। एक हाथ में माला और एक हाथ में भाला लेने की जरूरत है। नागालैंड, मिजोरम, केरल हिन्दू विहिन हो गए हैं। संतान हमारे लिए उत्पन्न करिए, मैं गोद ले रही हूँ। विहिप से जुड़ने से सँस्कार मिलेगा।

पूज्य महंत प्रज्ञा जी भारती ने कहा कि भगवान और मठ मंदिर परतंत्र हो गए हैं। आठ लाख से अधिक मंदिर सरकारी नियंत्रण में हैं। मस्जिद और चर्च नियंत्रण में नहीं। पुजारी को सरकार से अनुमति लेना पड़ता है। आश्रम आध्यात्म के प्रचार केन्द्र हैं। सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय कर दिया है कि मठ–मंदिरों पर से कब्जा हटाया जाए। लेकिन कब्जा लगातार हो रहा है। सँस्कार का केन्द्र मठ–मंदिर हैं। गौशाला, पाठशाला, यज्ञशाला होने से मठ की महिमा बढ़ती है। लेकिन यह सरकार तय करती है।

पूज्यसाध्वी अर्चना जी ने कहा कि बच्चों का भविष्य सँस्कार के बिना दिशाहीन हो जाता है।

साध्वी विभानन्द गिरी ने कहा कि जहाँ पैर रख दिया, वह जमीन वक्फ बोर्ड का हो गया। सिया–सुन्नी के अलग–अलग वक्फ बोर्ड है। हमारे यहाँ मरने पर जला दिया जाता है, वो मरने पर भी छः गज जमीन कब्जा करते हैं। राज्य सरकार और केन्द्र द्वारा अधिकार दिया गया, उनसे जमीन के मामले में सलाह लिया जाता है। राज्य में बहुमत आने पर वक्फ बोर्ड हटेगा। वो पाँच पत्नी, पचीस बच्चे पैदा करते हैं। हमारा एक बच्चा होता है परिवार में। सँस्कार के साथ जनसँख्या बढ़ाना भी जरुरी। रोजगार की समस्या है, हिन्दूओं के लिए। कार बनाने वाला मुसलमान, टेलर, मन्दिर सजाने वाला, फल वाला मुसलमान है। उनके पास जमीन, आबादी, रोजगार है, इसीलिए उनको मजबूती मिल रही है।

जूना अखाड़ा की सहज योगी माता जी शैलजा जी ने कहा कि अर्थ के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। अर्थ की आवक बढ़ते ही सरकार मंदिर पर नियंत्रण कर लेती है।

लंदन से आई चंद्रकला सखी जी ने कहा कि विदेश में दस से अधिक देशों में मेरा प्रवचन होता है। शांति और सुख सनातन धर्म से ही है। भारत पुण्यभूमि है, सौभाग्य से हमारा जन्म यहाँ हुआ है। बच्चों को संस्कार देने का प्रयास है। हमारे यहाँ जैसा विदेश में बच्चे खुश नहीं हैं, वहाँ ऑटिज्म की समस्या बहुत बड़ी है। यहाँ ईसाईयत को बढ़ा रहे हैं, हम एक साथ काम करेंगे, तो उनको पीछे कर सकते हैं।

कबीर पंथ से चन्द्रकला दीदी ने कहा कि सामाजिक समरसता आना चाहिए। जाति–पाँति पूछे नहीं कोई, हरि का भजे सो हरि का होई। ईसाई सेवा और प्रेम का स्वांग रचकर धर्मान्तरण कर रहे हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य का सहारा लेकर प्रेयर बेचते हैं। प्रेम बांटते नहीं लूटते हैं। कुछ समय के लिए आकर्षित करते हैं। सब धरती गोपाल की, सब आत्मा परमात्मा की, तो सबको साथ आना होगा। अछूत और पृथक नहीं करना। सबका शरीर– रूधिर एक है। कोई अलग नहीं। सब शुद्धानंद, आत्मानंद है। प्रेम धारण करने से विषमता समाप्त हो जाएगी, समरसता आ जाएगी।

साध्वी अन्नपूर्णा जी ने कहा कि सामाजिक समरसता के लिए केवल जाति और धन–वैभव का विषय नहीं, अपने पदभार को भी सहज कर के सबको गले लगाना पड़ेगा। अनैतिकताएँ बढ़ रही हैं। विद्यार्थी में इगो नहीं होना चाहिए। मन बड़ा कर के सबको समान व्यवहार करना होगा। सीता, पद्मावती बनना होगा। ऋषि परम्परा पुनः आरम्भ करना होगा। चरित्रवान बनना होगा।

गुजरात के डांग जिले से आई महंत साध्वी यशोदा दीदी ने कहा कि हमारे आश्रम में सौ बच्चियाँ और बीस बेटे हैं, हम उनको सँस्कार दे रहे हैं। नई पीढ़ी में हमारी बात पहुँचनी चाहिए। मैं बनवासी बच्ची यहाँ तक आ पायी, यह संघ और विहिप की देन है, मैं बारह भाई–बहनों में एक थी, इसीलिए संत बनी। जिसके पाँच बच्चे हैं, उनको पुरस्कृत करती हूँ।

पूर्ण प्रज्ञा दीदी की शिष्या समर्पिता जी ने कहा कि गंगा के बारे में कोई चर्चा नहीं। गंगा–यमुना के सुख–वैभव की चिन्ता करना चाहिए। तीर्थ नदियों के तट पर हैं। दिव्य नदियों की शुद्धता–पवित्रता की चिन्ता करनी होगी। शिक्षा–वेद–पुराणों की देना आवश्यक है। सोलह सँस्कारों का दृढ़िकरण करना होगा। हर क्षेत्र में गुरुकुल हों, जहाँ अभावग्रस्त बच्चों को पाल सकें और शिक्षा दे सकें। यह राजाओं द्वारा रक्षित माता है, हम अपनी गंगा माँ के राजा तो हैं ही। मिलकर इसको स्वच्छ करना होगा।

महामण्डलेश्वर ध्यानमूर्ति जी ने कहा कि हमारा निजी जीवन कैसा है? यह तय करेगा कि इतिहास में हमारा नाम कैसा लिखा जाएगा। हमारी लड़ाई अपनों से, दूसरों से लड़ने में हम सक्षम हैं। आगामी बीस साल हम नहीं लड़ पाए, तो हमारा अस्तित्व नहीं बचेगा। वो कब्र में से निकल कर भी मतदान करते हैं और हम मतदान के दिन छुट्टी मनाते हैं। राम मंदिर पर्यटक स्थल नहीं, यह बलिदान से मिला है।

परम पूज्य महामण्डलेश्वर आत्म चेतना गिरी जी ने कहा कि हमारे सनातन को निरंतरता देना है। कुम्भ–पर्व–उत्सव–अखाड़े–संयास परम्परा के रहते हुए मंदिरों पर विधर्मियों का कब्जा हो गया। विहिप को जागरण करना पड़ रहा है। जब ये बुलाएंगे, तभी हम जागेंगे। हम संयासी अपने लिए हुए या जनकल्याण के लिए? विहिप ने हमें राम मन्दिर दिया, हम मथुरा और काशी लेने के लिए प्रयत्न करेंगे? संगठन की शक्ति से यह काम सम्पन्न हो।

जयपुर से परम शक्ति धाम की समदर्शी जी ने कहा कि अयोध्या तो एक

झांकी है मथुरा–काशी बाकि है, मानसरोवर बाकी है। लव जिहाद चल रहा है, उनकी आबादी बढ़ रही है। पन्द्रह सौ बच्चों को पालती हूँ, सँस्कार दे रही हूँ। दो हजार बच्चे सँस्कारित कर दिए। मठ–मंदिरों के दरवाजे बच्चों के लिए खोल दिजीए। 26 बच्चियों को लव जिहाद से बचाया और विवाह करा दिया। बेटी बचाओ, बहू लाओ।

महामण्डलेश्वर पूज्य दिव्य चेतना गिरी ने कहा कि हमने राम मंदिर बनाया, अपने भगवान को लाये हैं, मथुरा और काशी में भी भगवान को वापस लाना है। बेटियों को योगिनी, तपस्वीनि और गार्गी बनाना है। काशी, मथुरा दोनों वापस लेना है।

जबलपुर से आई साध्वी ज्ञानेश्वरी दीदी ने कहा कि सँस्कारों, धर्म और धर्म परिवर्तन पर चर्चा आवश्यक है। गुरुकूलों पर भी चर्चा आवश्यक है। कान्वेंट स्कूल में पढ़ाना स्टेटस सिंबल मानते हैं। हमसे कमाकर हमारा ही पैसा लगाकर हमारा धर्मान्तरण कर रहे हैं। गुरुकुल विद्यालय पुनः प्रारम्भ किए जाएँ। अपनी भाषा अपना हाथ है, यदि बच्चे को विदेशी भाषा पढ़ा देंगे, तो हाथ और हथियार दोनों हमारा नहीं रह जाएगा, हमारे काम नहीं आयेगा। पर्यावरण बर्बाद हो रहा है। फूड एडल्टीरेशन बढ़ रहा है, फल–सब्जियों की जड़ों में रसायन डाल रहे हैं। इससे स्वागत का संकट उत्पन्न हो रहा है।

तमिलनाडु से आई सत्यबंदना जी सरस्वती ने कहा कि हिन्दू राष्ट्र की मांग बढ़ रही है। बच्चे जीम, क्लब जा रहे हैं। बृद्धाश्रम केवल हिन्दूओं के लिए है। मुसलमानों और ईसाईयों के लिए नहीं है। बच्चों को गुरुकुल में भेजने की आवश्यकता है। वक्फ बोर्ड बिल जरुरी है, समान नागरीक संहिता जरुरी है।

जागृत चेतना जी हरिद्वार से कहती हैं कि प्रकृति का संरक्षण बहुत जरूरी है। धरती से अम्बर तक का पर्यावरण ठीक करना होगा। हम दूध चढ़ाकर पैकेट वहीं फेंक आते हैं। हम तीर्थों और गंगा को दूषित कर रहे हैं। इस प्रदूषण से बचाना होगा तीर्थों को। मातृ शक्ति अखाड़ा स्थापित किया है, न्यायालय से जीतकर।

गंगोत्री से आई साध्वी रेणुका जी कहती हैं कि देश–धर्म के लिए कितनी सेवा हो जाए, यह सुनिश्चित किया। जनसँख्या बढ़ाना ही चाहिए, यह हमारी मजबूरी भी है। दो बच्चे से आगे तीसरा बच्चा भी चाहिए। तीसरे बच्चे के प्रसव के समय प्रसव पीड़ा से त्रस्त महिला को डाक्टरों ने विवश किया कापर्टी लगवाने के लिए। मंदिर नीजि न हो, समाज का हो। समाज में अच्छे सँस्थाओं की जरुरत है। मन्दिरों को राक्षसों के कब्जे से मुक्त कराने की आवश्यकता है। जय भीम–जय मीम का नारा देकर धर्मान्तरण कराया जा रहा है। हमने राम नाम को कभी नहीं छोड़ा। हमें जातिगत रूप से टार्गेट किया जा रहा है। सबको गले लगाकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

मैतेई जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आचार शुद्धि की बहुत आवश्यकता है। सोचना भी ठीक करने की आवश्यकता है। कभी भी व्यक्ति पूर्ण नहीं हो पाता है, लेकिन प्रयत्न करना चाहिए। गलती मनुष्य से भी होती है। हमारे पीछे चलने वाला समाज हमारा अनुसरण करता है। इसीलिए हमारा आचरण ठीक होना जरूरी है। सम् यास को ही सन्यास कहा जाता है। हमारा आचार और विचार श्रेष्ठ हो।

धन्यवाद ज्ञापन मीनाक्षी ताई ने किया। शांति पाठ के साथ सभा पूर्ण हुई।

पटना में बजरंग दल द्वारा त्रिशूल दीक्षा का आयोजन

पटना (बिहार)। पटना जिले के सम्पचक प्रखंड आर बी एस पब्लिक स्कूल में विश्व हिंदू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल द्वारा त्रिशूल दीक्षा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता जिला गौरक्षा प्रमुख विनोद जी ने की।

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बजरंग दल के प्रांत संयोजक श्री रजनीश जी ने कहा कि भारत का इतिहास पराभव का नहीं, विजय का है। भारत में तीन प्रकार के आक्रमण हुए। प्रथम यवन, हूण, शक राजनीतिक थे। दूसरा इस्लाम मजहबी और राजनीतिक था। तीसरा अँग्रेजों का आक्रमण राजनीतिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक था। हम शूर थे हम आपस में झगड़ते थे। मुसलमान भी आपस में झगड़ते थे, परंतु हमने झगड़ों का लाभ नहीं उठाया। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को समाज की रक्षा करने के लिए विधर्मी से लड़ने के लिए जिस प्रकार से देवी–देवता के हाथों में एक हाथ में शास्त्र है, दूसरे हाथ में शस्त्र इस प्रकार से बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के हाथ में भी एक हाथ में शास्त्र है तो दूसरे हाथ में शस्त्र, ऐसा आह्वान करके बजरंग दल कार्यकर्ताओं को त्रिशूल दीक्षा दी गयी। धर्म की जय करना है, तो अधर्म का नाश करना होगा। भारत माता के विरुद्ध काम करना अधर्म है। गौ हत्या के विरुद्ध काम करना अधर्म है। धर्मांतरण करना अधर्म है, संतों का अपमान करना अधर्म है। इसके लिए प्रत्येक दिन कार्यकर्ता इस संकल्प के साथ हमेशा खड़ा है।

कार्यक्रम में बजरंग दल के प्रांत सह संयोजक अभिमन्यु जी, मिलन केंद्र प्रमुख उपेन्द्र जी, विद्यार्थी प्रमुख अभिषेक राजा जी, आर.बी.एस के निर्देशक राजू जी, सन्तोषानन्द जी सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने त्रिशूल दीक्षा में भाग लिया।

अध्यात्म, राष्ट्रीय एकता और मानवता का • महासंगम महाकुम्भ

मृत्युंजय दीक्षित

सनातन हिंदू सँस्कृति का महापर्व है–महाकुम्भ, विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक, धार्मिक और साँस्कृतिक उत्सव। सनातन सँस्कृति की आस्था का सबसे बड़ा और सर्वोत्तम पर्व महाकुम्भ न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व में सुविख्यात है। यह एकमात्र ऐसा महापर्व है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व से श्रद्धालु भक्त कुम्भस्थल पर आकर भारत की समन्वित सँस्कृति, विश्व बंधुत्व की सद्भावना और जनसामान्य की अपार आस्था का अनुभव करते हैं। वैभव और वैराग्य के मध्य आस्था के इस महाकुम्भ में सनातन समाज नदी के पावन प्रवाह में अपने समस्त विभेदों, विवादों और मतांतरों को विसर्जित कर देता है। इस मेले में मोक्ष व मुक्ति की कामना के साथ ही तन, मन तथा बुद्धि के सभी दोषों की निवृत्ति के लिए करोड़ों श्रद्धालु अमृत धारा में डुबकी लगाते हैं। महाकुम्भ में योग, ध्यान और मंत्रोच्चार से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है। महाकुम्भ में समस्त अखाड़े प्रतिभाग करते हैं, उनमें से प्रत्येक की महिमा, इतिहास व परम्पराएँ अदभुत हैं।

महाकुम्भ का इतिहास प्राचीन पौराणिक कथाओं में रचा बसा है। इसकी कथा समुद्र मंथन और देव–दानव संघर्ष से जुड़ी है, जिसमें अमृत कलश की प्राप्ति हुई थी। समुद्र मंथन की कथा के अनुसार राजा बलि के राज्य में शुक्राचार्य के आशीर्वाद एवं सहयोग से असुरों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और देवतागण उनसे भयभीत रहने लगे थे। भगवान विष्णु के सुझाव पर देवताओं ने असुरों से मित्रता कर ली और समुद्र मंथन किया। क्षीर सागर के मंथन के लिए मन्दराचल पर्वत को मथानी और वासुकी नाग को रस्सी बनाया गया। समुद्र मंथन से सर्वप्रथम हलाहल विष निकला, जिसका पान करके शिव जी ने समस्त सृष्टि की रक्षा की और नीलकंठ कहलाए, तत्पश्चात क्रमशः चन्द्र, कामधेनु गौ, कल्पवृक्ष, पारिजात, आम्रवृक्ष तथा संतान ये चार दिव्य वृक्ष, कौस्तुभ मणि, उच्चैश्रवा, अश्व और ऐरावत हाथी निकले। इसके पश्चात माता लक्ष्मी का प्राकट्य हुआ, जिन्होंने भगवान विष्णु का वरण किया। वारुणी और शंख निकले। अन्त में धन्वन्तरि वैद्य अमृत घट लेकर निकले। दैत्यों ने उस अमृत घट को छीन लिया और पीने के लिए आपस में ही लड़ने लगे, तब भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारणकर दैत्यों को रूप–सौन्दर्य से आसक्त कर लिया। दैत्यों ने अमृतघट विष्णु रूपी मोहिनी को बांटने के लिए दे दिया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवताओं को अमृत बांटना प्रारम्भ किया, एक असुर को मोहिनी की यह चालाकी समझ में आ गयी और उसने देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत प्राप्त कर लिया। जब देवताओं का ध्यान उसकी ओर गया, तो उन्होंने भगवान विष्णु को बताया। भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उस दैत्य की गर्दन धड़ से अलग कर दी, दैत्य के शरीर के यही दो भाग राहु और केतु हैं। देवों को अमृत पान कराकर भगवान विष्णु अन्तर्ध्यान हो गये। इसके पश्चात देवासुर संग्राम छिड़ गया। देवराज इन्द्र की आज्ञा से उनके पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर पलायन कर गए, दैत्य उनका पीछा कर रहे थे, इस

भागने के क्रम में जिन स्थानों पर अमृत छलककर गिरा, उन्हीं स्थानों पर कुम्भ का आयोजन होता है। वे स्थान हैं हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज। अमृत कलश लेकर भागने के समय सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति तथा शनि ने असुरों से जयंत की रक्षा की थी, यही कारण है कि इन चारों ग्रहों की विशेष स्थिति होने पर ही कुम्भ का आयोजन होता है। देवासुर संग्राम 12 वर्ष चला था, जब देवता बलि पर विजय प्राप्त कर सके थे, अतः प्रत्येक बारह वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है।

महाकुंभ की महिमा का वर्णन स्कंद पुराण में स्पष्ट किया गया है। विष्णु पुराण में भी कुम्भ स्नान की प्रशंसा की गई है। कुंभ की अनेक व्याख्या की गई हैं। वेदों में भी कुम्भ की महिमा बताई गई है और ज्योतिष तथा योग में भी कुम्भ है। ऋग्वेद में कुम्भ शब्द पाँच से अधिक बार, अथर्ववेद में दस बार और यजुर्वेद में अनेक बार आया है। ब्रह्माण्ड की रचना को भी कुम्भ के सदृश ही माना गया है। पृथ्वी भी ऐसी ही आकृति ग्रहण करती है। पृथ्वी का परिक्रमण पथ भी कुम्भकार ही है। कुम्भ का उपयोग घी, अमृत और सोमरस रखने के लिए भी किया जाता था। कुम्भ में ही औषधि संग्रह और निर्माण भी किया जाता था। वेदों में कलश को समुद्रस्थ कहा गया है, वहीं अथर्ववेद में पितरों के लिए कुम्भ दान का उल्लेख है।

'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ है 'घट, कलश, जलपात्र या करवा। भारतीय संस्कृति में 'कुम्भ' मंगल का प्रतीक है। यह शोभा, सौन्दर्य एवं पूर्णत्व का वाचक भी है। सनातन सँस्कृति में समस्त धार्मिक एवं मांगलिक कार्य स्वास्तिक चिन्ह से अंकित अक्षत, दुर्वा, आम्र पल्लव से युक्त जल पूर्ण कुम्भ के पूजन से प्रारम्भ होते हैं। कुंभ आदिकाल से हमारी आध्यात्मिक चेतना के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतीय सँस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी सँस्कारों में कुम्भ का सर्वाधिक महत्व है। मनुष्य जीवन की अंतिम यात्रा में भी अस्थि कलश अर्थात् कुम्भ और गंगा का ही योग है।

ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति तथा अन्य परम्पराओं के अनुसार कुम्भ के तीन प्रकार होते हैं, अर्ध कुम्भ, कुम्भ तथा महाकुम्भ, इस वर्ष प्रयागराज में हो रहा कुम्भ महाकुम्भ है, जिसमें 12–12 वर्षों की 12 आवृत्तियाँ पूर्ण हो रही हैं। यह अवसर प्रत्येक 144 वर्ष के उपरांत आता है, इसीलिए इसे महाकुंभ कहा जाता है।

महाकुम्भ और प्रयागराज ये दुर्लभ संयोग है, क्योंकि कुम्भ–महाकुम्भ है और प्रयागराज–तीर्थराज है। प्राचीन काल में प्रयागराज को बहुयज्ञ स्थल के नाम से जाना जाता था। ऐसा इसलिए क्योंकि सृष्टि कार्य पूर्ण होने पर सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ यहीं किया था तथा उसके बाद यहाँ पर अनेक पौराणिक यज्ञ हुए। प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी संगम है। महाकुम्भ के अवसर पर यहाँ पर स्नान करना सहस्रों अश्वमेध यज्ञों, सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से भी अधिक पुण्य प्रदान करता है।

महाकुंभ की महिमा का वर्णन स्कंद पुराण में स्पष्ट किया गया है। विष्णु पुराण में भी कुम्भ स्नान की प्रशंसा की गई है। कुंभ की अनेक व्याख्या की गई हैं। वेदों में भी कुम्भ की महिमा बताई गई है और ज्योतिष तथा योग में भी कुम्भ है। ऋग्वेद में कुम्भ शब्द पाँच से अधिक बार, अथर्ववेद में दस बार और यजुर्वेद में अनेक बार आया है। ब्रह्माण्ड की रचना को भी कुम्भ के सदृश ही माना गया है।

प्रयागराज महाकुम्भ–2025 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में सनातन धर्म के समस्त मत मतान्तर, समस्त अखाड़े–आश्रम तथा समस्त महान संतों का आगमन हो रहा है, ऐसे–ऐसे संत पधार रहे हैं, जो सामान्य रूप से दर्शन नहीं देते। इसके अतिरिक्त बड़ी सँख्या में सनातन धर्म को मानने वाले विदेशी संतों–महंतों तथा उनके शिष्यों का आगमन भी हो रहा है। यह दृश्य अत्यंत अद्भुत होता है, जब आम भारतीय जनमानस को उनके भी दर्शन प्राप्त होते हैं।

प्रयागराज महाकुम्भ–2025 में अनुमानतः 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आगमन संभावित है। मेले की तैयारियाँ स्वयं प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में की गई है। मेले के पौराणिक और साँस्कृतिक महत्व के अनुरूप ही श्रद्धालुओं का अनुभव रहे, इस दृष्टि से महाकुम्भ आयोजन की तैयारियाँ दो वर्ष पूर्व से आरम्भ कर दी गई थीं। लगभग पचास करोड़ लोगों के आतिथ्य को संभाल सकने योग्य अवस्थापना का निर्माण किया गया है। उड्डयन, रेल, सड़क परिवहन ने मिलकर यात्रा सुगम बनाने के लिए अपनी सेवाओं को विस्तार दिया है। प्रयागराज नगर को पौराणिक नगरी की तरह सजाया गया है। महाकुंभ में इस बार केवल सनातन–सँस्कृति के अलौकिक, आध्यात्मिक पहलुओं का दर्शन ही नहीं होगा, अपितु विकसित होते भारत का दर्शन भी होगा। महाकुंभ मेले के प्रबंधन में प्रत्येक स्थान पर आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। अन्य प्रान्तों से आ रहे श्रद्धालुओं को कोई कठिनाई न हो, इसके लिए सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। डेढ़ लाख टेंटों वाली टेंट सिटी बनाई गयी है। स्वच्छता के विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। मेला परिसर में एक 100 शैय्या वाला चिकित्सालय भी स्थापित किया गया है।

महाकुम्भ–2025 में गुलामी की मानसिकता के प्रतीक शब्दों और चिह्नों को हटाने का महाअभियान प्रारम्भ हो रहा है, जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम शाही स्नान का नाम बदलकर अमृत स्नान कर दिया गया है। अखाड़ों के मेला प्रवेश को अब पेशवाई के स्थान पर अखाड़ा छावनी प्रवेश कहा जाएगा। एक घाट का नाम बदलकर महान क्रांतिकारी शहीद चंद्रशेखर आजाद घाट किया गया है। महाकुंभ–2025 में डिजिटल क्रांति भी देखने को मिलेगी। महाकुंभ–2025 पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक समरसता के व्यापक अभियान के लिए भी स्मरणीय बनाया जायेगा। महाकुंभ में ज्योतिष कुम्भ से लेकर स्वास्थ्य के विभिन्न क्षेत्रों के महाकुम्भ का भी आयोजन होने जा रहा है। मेले की समाप्ति तक निर्धारित मेला क्षेत्र उत्तर प्रदेश के 76 वें जनपद के रूप में मान्य होगा, यह घोषणा मेले के विस्तार और महत्व का प्रमाण है।

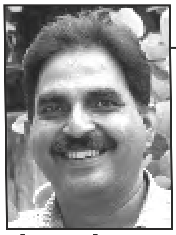

संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के करीब आठ वर्ष के शासनकाल में राज्य की 'तस्वीर' बहुत बदल गई है। इस बदलाव का आगाज 2017 से उनके पहली बार सीएम बनने के बाद दिखने लगा था, जो आज नई ऊँचाइयों पर पहुँच गया है। विशेष बात यह है कि पिछले आठ वर्षो में योगी की कार्यशैली और तेवर में कोई बदलाव नहीं आया है। न वह रूके हैं, न थके हैं। लॉ एंड आर्डर, महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा, अपराध और भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, आज भी उनकी प्राथमिकता में है। बुलडोजर को उनकी दूसरी इनिंग में भी आराम नहीं दिया गया था। यह सब तो प्रशासनिक स्तर पर हो रहा है, वहीं योगी, प्रधानमंत्री मोदी के साथ प्रदेश की साँस्कृतिक और धार्मिक धरोहर को भी

योगी की 'तपस्या' का महाकुंभ

वह अपने अंदाज में नया आयाम दे रहे हैं। योगी के पहले कार्यकाल में 2019 में प्रयागराज में शानदार अर्धकुंभ का आयोजन और वाराणसी में बाबा विश्वनाथ के मंदिर का जीर्णोधार विशेष रहा, तो 05 अगस्त 2020 को उनका प्रधानमंत्री के साथ अयोध्या में प्रभु श्री रामलला के मंदिर की आधारशिला रखना भी सनातन प्रेमियों के लिए 'मील का पत्थर' साबित हुआ। इसके करीब सवा साल बाद 13 दिसंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के फेज–1 का उद्घाटन किया, तो इस अवसर पर भी योगी, पीएम मोदी के साथ कंधे से कंधा मिलाये खड़े नजर आए। हिंदू धर्म की दृष्टि से देखें, तो काशी का ज्योतिर्लिंग 12 ज्योतिर्लिंगों में सबसे महत्वपूर्ण है। इस कॉरिडोर की नींव खुद पीएम मोदी ने 8 मार्च 2019 को रखी थी।

बात दूसरे कार्यकाल की कि जाए तो यह भी शानदार चल रहा है। 22 जनवरी 2024 को रामलाल के मंदिर का उदघाटन करके मोदी के साथ–साथ योगी ने भी करोड़ों सनातन प्रेमियों रामभक्त हिन्दुओं का दिल जीत लिया। अभी कुछ दिनों पूर्व ही योगी ने प्रदेश के पाँच जिलों के मंदिरों के विकास की घोषणा किया है। इसमें लखीमपुर खीरी से उन्नाव, हरदोई, फर्रुखाबाद जैसे पाँच बड़े जिलों के मंदिरों को शामिल किया गया है। इसके लिए करोड़ों रुपये का बजट घोषित किया गया है, ताकि मथुरा, काशी और अयोध्या जैसा भव्य स्वरूप इन धार्मिक स्थलों को दिया जा सके। किन्तु सबसे विशेष है, प्रयागराज में होने जा रहा महाकुंभ–2025, जिसका वर्णन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है। यह दुनियाँ का सबसे बड़ा सार्वजनिक समागम और आस्था का सामूहिक आयोजन है। इस समागम में मुख्य रूप से तपस्वी, संत, साधु, साध्वियाँ, कल्पवासी और सभी क्षेत्रों के तीर्थयात्री शामिल होते हैं। कुंभ मेला एक ऐसा आयोजन है, जो आंतरिक रूप से खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक–साँस्कृतिक रीति–रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में बेहद समृद्ध हो जाता है।

वैसे तो महाकुंभ मेला–2025 प्रयागराज में 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने रहा है, लेकिन इसकी तैयारियाँ तीन साल पहले योगी सरकार ने 2022 में दूसरी बार सरकार बनाने के साथ ही शुरू कर दी थी। योगी ने महाकुंभ को भव्य बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। इधर तो शायद ही कोई दिन ऐसा गया होगा, जब योगी ने महाकुंभ के कार्यो की समीक्षा नहीं की होगी। इस कुंभ को योगी की तीन साल की तपस्या का महाकुंभ कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। महाकुंभ की तैयारियाँ अब अंतिम पड़ाव पर हैं।

योगी ने जारी किया महाकुंभ का प्रतीक चिह्न – मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 06 अक्टूबर 2024 को प्रयागराज में महाकुंभ–2025 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) का अनावरण किया, साथ

ही वेबसाइट और ऐप को भी लॉन्च किया। महाकुंभ के लोगो का उपयोग महाकुंभ की वेबसाइट और ऐप के साथ अन्य प्रचार माध्यमों में किया जाएगा। वेबसाइट और ऐप श्रद्धालुओं और पर्यटकों के वायु, रेल और सड़क मार्ग से महाकुंभ पहुँचने में काफी कारगर रहने वाला है। इसके माध्यम से प्रयागराज में आवास, स्थानीय परिवहन, पार्किंग, घाटों तक पहुँचने के दिशा–निर्देश आदि की जानकारी मिल सकेगी। इसमें स्थानीय और आसपास के पर्यटन स्थलों की भी जानकारी होगी। मेला स्थल और धार्मिक गतिविधियों से जुड़ी हुई जानकारी इसके द्वारा दी जाएगी।

महाकुंभ से पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा – पर्यटन के क्षेत्र में शीर्ष पर पहुँचने की योगी सरकार की उम्मीदों का आधार इस बार प्रयागराज में लगने वाला महाकुंभ बनता दिख रहा है। पिछले डेढ़ दशक के पन्ने पलटें तो यूपी में सबसे अधिक 58 करोड़ से अधिक पर्यटक 2019 में यूपी में आए थे। इसमें 24 करोड़ से अधिक की हिस्सेदारी लगभग डेढ़ महीने तक चले प्रयागराज कुंभ की थी। इसलिए 13 जनवरी से शुरू हो रहे प्रयागराज महाकुंभ में लगने वाली आस्था की डुबकी से यूपी की अर्थव्यवस्था को 'अर्थ' के अमृत की आस है। माना जा रहा है कि महाकुंभ में इस बार 40 से 45 करोड़ श्रद्धालु आएंगे। मानवता की इस सबसे बड़ी जुटान के भरोसे प्रदेश में 2025 में कुल पर्यटन की सँख्या 65 से 70 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। महाकुंभ में व्यवस्थागत तैयारियों पर 7 हजार करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जा रहे हैं। अलग–अलग देशों में भी ब्रांडिंग का असर यह है कि यूरोपीय देश के नागरिक भी महाकुंभ आने या जानकारी हासिल करने के लिए उत्साहित नजर आ रहे हैं। वहीं महाकुंभ की आभा पर माँ गंगा की कृपा बरसने लगी है। संगम पर गंगा मैया ने लगभग 300 मीटर स्नान घाट के विस्तार का अवसर दे दिया। ठीक संगम नोज के सामने यह जगह मिल गई है। इससे संगम का स्नान घाट लगभग पाँच हजार रनिंग फीट हो जाएगा, जो पहले लगभग साढ़े तीन हजार रनिंग फीट तक ही हो पा रहा था।

फेक न्यूज रोकने को डिजिटल वारियर्स – महाकुंभ में कोई व्यवधान नहीं खड़ा कर पाए, इसलिये फेक न्यूज के खिलाफ अभियान चलाने, साइबर अपराध के प्रति जागरूकता एवं पुलिस के सराहनीय कार्यों को इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर प्रसारित करने के लिए डिजिटल वारियर्स को तैनात किया गया है। इसके लिए युवा पीढ़ी के इंटरनेट मीडिया इन्फ्लूएंसर्स एवं कॉलेज के छात्रों को जोड़ा गया है। वहीं महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सटीक गिनती के लिए एआई से लैस कैमरे लगाए गए हैं। योगी सरकार का कहना है कि प्रयागराज में हर 6 साल पर होने वाले कुम्भ या 12 साल पर होने वाले महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सही सँख्या गिनने की अभी तक कोई सटीक तकनीक नहीं थी।

अस्त्र–शस्त्र संग आवाहन अखाड़े का छावनी प्रवेश – महाकुंभ का आरम्भ नजर आने लगा है। सुसज्जित रथों, बग्घियों पर सवार नागाओं, संगम की रेती पर 22 दिंसबर 2025 को श्रीपंच दशनाम आवाहन अखाड़े के महामंडलेश्वरों, श्रीमहंतों, नागा सन्यासियों की छावनी प्रवेश शोभायात्रा निकली, तो उनकी एक झलक पाने के लिए लोग उमड़ पड़े। विविध रूप वाले बाबाओं को देखने के लिए लोग कतारबद्ध खड़े रहे। रास्ते भर नागा सन्यासियों के दल शस्त्रों, लाठियों से कलाबाजियाँ भी करते रहे। छतों, बारजों से पुष्पों की वर्षा होती रही। मड़ौका उपरहार से दिन के 12 बजे भगवान सिद्ध गणेश के पूजन के साथ रथों, बग्घियों, सुसज्जित घोड़ों पर सवार होकर आवाहन अखाड़े के संतों की छावनी प्रवेश शोभायात्रा निकली।

यूनेस्को से कुंभ को मान्यता – वर्ष 2017 में कुंभ मेले को यूनेस्को ने 'मानवता की अमूर्त साँस्कृतिक धरोहर' का दर्जा दिया था। महाकुंभ का आयोजन हर 144 साल में यानी 12 पूर्ण कुंभ मेलों के बाद होता है। पूर्ण कुंभ मेला हर 12 साल में आता है और इसे इन चारों जगहों पर बारी–बारी से आयोजित किया जाता है। इसके अतिरिक्त हर 6 साल में दो जगहों हरिद्वार और प्रयागराज में अर्ध कुंभ मेला भी लगता है। अर्ध कुंभ, पूर्ण कुंभ के बीच में आता है।

सरकार मीडिया को दे रही महाकुंभ कवरेज की टिप्स – मीडिया कवरेज के लिए अँग्रेजी और हिंदी में छपे यूपी सरकार के एक ब्रोशर में पत्रकारों और संपादकों को बताया गया है कि महाकुंभ 2025 को कैसे कवर किया जाए, उन्हें किस तरह की स्टोरी करनी चाहिए और इसके लिए वे किससे बातचीत करें व किसका साक्षात्कार लें।

महाकुंभ 2025 की तैयारियाँ – 2022 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक के साथ शुरू हुई। तब से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज के कई दौरे किए। आयोजन से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं तैयारियों का जायजा लिया और कई प्रमुख परियोजनाओं का

उद्घाटन किया। दुनियाँ के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम की मेजबानी करने के लिए एक अस्थायी शहर, 'महाकुंभ नगर' बसाने के लिए यह जरूरी था। इस नए शहर को बनाने के लिए 50,000 से अधिक मजदूरों ने दिन–रात खुद को समर्पित कर दिया। जहाँ स्थायी पुल समय पर नहीं बन पाए, वहाँ अस्थायी चार लेन वाले स्टील पुल बनाए गए। प्रयागराज की ओर जाने वाली सड़कों को चौड़ा किया गया और तीर्थयात्रियों की आमद को ध्यान में रखते हुए उनका सौंदर्यीकरण किया गया। डबल इंजन वाली सरकार ने बेहतर तालमेल के साथ काम किया और यह सुनिश्चित किया कि रेलवे पुल और अन्य बुनियादी ढांचे इस आयोजन की मांगों को पूरा करें।

जब साक्षी महाराज को कुंभ में नहीं आने दिया गया – निर्मल अखाड़ा अपने नीति–नियम के प्रति सख्त व समर्पित है। पद भले कितना बड़ा हो, लेकिन गलत कार्य करने वाले को क्षमा नहीं किया जाता। यही कारण है कि बीजेपी सांसद साक्षी महाराज को भी कार्रवाई का सामना करना पड़ा था। साक्षी महाराज निर्मल अखाड़ा के महामंडलेश्वर हैं। 10 फरवरी 1997 में भाजपा के चर्चित नेता ब्रह्मदत्त द्विवेदी की फर्रुखाबाद में गोली मारकर हत्या कर दी गई। हत्याकांड में साक्षी महाराज का नाम जुड़ गया। इस पर अखाड़े ने उन्हें समस्त पदों से हटा दिया। वर्ष 2001 से 2007 तक हुए कुंभ–महाकुंभ में उन्हें शामिल नहीं किया। कोर्ट से बरी होने के बाद उन्हें पुनः अखाड़े में शामिल किया गया।

महाकुंभ पर आतंक का भी साया – एक तरफ केंद्र की मोदी और यूपी की योगी सरकार महाकुंभ को यादगार बनाने में जुटी है, तो दूसरी तरफ कट्टरपंथियों की जमातें चुपचाप पर्दे के पीछे से महाकुंभ में षड्यंत्र का जाल बिछा रही हैं। खुफिया जानकारी के अनुसार महाकुंभ में अप्रिय घटनाओं को अंजाम देने के लिए सीमा पार से भारत के मीर जाफरों की फौज को सक्रिय कर दिया गया है, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में छद्म वेष धारण करके राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी और समाज विरोधी कार्यों को अपने आकाओं के आदेशों पर निरंतर सम्पन्न कर रहे हैं। आतंक के आकाओं की विध्वंसात्मक सरगर्मियों की जानकारी होते ही शासन ने प्रयागराज में सीबीआई टीम गठित कर दी है, जो केमिकल अटैक से निपटने में सक्षम बताई जाती है। इसी तरह बम निरोधी दस्तों की सँख्याओं में भी वृद्धि किया गया है। साइबर अटैक से निपटने के लिए विशेषज्ञों की सेवाएँ सुनिश्चित की गई है। एनआईए द्वारा विशेष चौकसी बरतने हेतु गुप्त स्थान निर्धारित किए जा चुके हैं, जहाँ से आयोजन स्थल पर पूरी तरह से निगरानी की जा सकेगी।

skslko28@gmail.com

डॉक्टर बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर समरसता यात्रा आयोजित

पटना (बिहार)। पटना स्थित भोला पासवान शास्त्री भवन, रामनगरी चौक, आशियाना से डॉक्टर बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर समरसता यात्रा का उद्घाटन कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता के प्रांत प्रमुख श्री रंजीत कुमार ने कहा कि यह यात्रा आज से प्रारंभ होकर सैकड़ों ग्रामों में जन–जागरण करते हुए 14 जनवरी को बेलछी प्रखंड के सकसोहरा में इसका समापन कार्यक्रम होगा।

विश्व हिंदू परिषद प्रांत संगठन मंत्री चितरंजन कुमार ने कहा कि हम सभी भारत माता की संतान हैं इसलिए हम सब एक हैं। हमारे पुरखे एक हैं। हमारे गोत्र एक हैं। इस कारण से हम में कोई पतित नहीं, कोई अछूत नहीं बल्कि हम सभी सहोदर भाई हैं, इसे चरितार्थ करते हुए डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर जी ने भी संविधान में समान अधिकार की चर्चा की है।

मुगलों के आक्रमण के कारण हिंदुओं में भेदभाव पैदा करने के लिए जातिवाद का सहारा लिया गया तथा छुआछूत का बीज बोया गया। बाबासाहेब अंबेडकर ने अपने जीवन में इन बिंदुओं के ऊपर बहुत काम किया और छुआछूत व जातिवाद का विरोध किया, सबको मिलकर रहने का सन्देश दिया है।

बाबा साहेब अंबेडकर ने अपनी पुस्तक भारत का विभाजन में अनुसूचित समाज के बन्धुओं को विधर्मियों से सावधान रहने की अपील की है। उन्होंने बार–बार जोर देकर कहा कि जो देश का नहीं हो सकता वह किसी का नहीं हो सकता। उनके प्रखर राष्टवादी विचार के कारण उन्हें कानून मंत्री के पद से इस्तीफा देना पड़ा। वे देश के विरुद्ध किसी भी विषय को सहन नहीं करते थे। इस कारण षड्यंत्र करके उन्हें चुनाव में हराया गया। उन्होंने उस समय भी धारा 370 का प्रखर विरोध किया था। वे बेबाक होकर बोलते थे। उन्होंने समाज की अनेक भ्रांतियों को दूर कर शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज के वातावरण में डॉ0 बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के जीवन को उनके जन–जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इसी कार्य को सिद्ध करने के लिए विश्व हिंदू परिषद समाजिक समरसता अभियान द्वारा डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर समरसता यात्रा निकाली गई है। यात्रा में सैकड़ों ग्रामों से हजारों बंधु जुड़ेंगे।

प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुम्भ मेले का आध्यात्मिक एवं आर्थिक महत्व

प्रहलाद सबनानी

हिंदू सनातन सँस्कृति के अनुसार कुंभ मेला एक धार्मिक महाआयोजन है जो 12 वर्षों के अवसर पर चार बार मनाया जाता है। कुंभ मेले का भौगोलिक स्थान भारत में चार स्थानों पर फैला हुआ है और मेला स्थल चार पवित्र नदियों पर स्थित चार तीर्थस्थलों के बीच घूमता रहता है, यथा, (1) हरिद्वार, उत्तराखंड में, गंगा के तट पर, (2) मध्य प्रदेश के उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर, (3) नासिक, महाराष्ट्र में गोदावरी के तट पर एवं (4) उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में गंगा, यमुना और पौराणिक अदृश्य सरस्वती के संगम पर।

प्रत्येक स्थल का उत्सव, सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की ज्योतिषीय स्थितियों के एक अलग संयोग पर आधारित है। उत्सव ठीक उसी समय होता है, जब ये स्थितियाँ पूरी तरह से व्याप्त होती हैं, क्योंकि इसे हिंदू धर्म में सबसे पवित्र समय माना जाता है। कुंभ मेला एक ऐसा आयोजन है, जो आंतरिक रूप से खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक–सँस्कृतिक रीति–रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में बेहद समृद्ध हो जाता है।

कुम्भ मूल शब्द कुम्भक (अमृत का पवित्र घड़ा) से आया है। ऋग्वेद में कुम्भ और उससे जुड़े स्नान–अनुष्ठान का उल्लेख है। इसमें इस अवधि में संगम में स्नान करने से लाभ, नकारात्मक प्रभावों के उन्मूलन तथा मन और आत्मा के कायाकल्प की बात कही गई है। अथर्ववेद और यजुर्वेद में भी कुम्भ के लिए प्रार्थना लिखी गई है। इसमें बताया गया है कि कैसे देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन से निकले अमृत के पवित्र घड़े (कुम्भ) को लेकर युद्ध हुआ। ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर कुम्भ को लालची राक्षसों के चंगुल से छुड़ाया था। जब वह इसे स्वर्ग की ओर लेकर भागे, तो अमृत की कुछ बूंदे चार पवित्र स्थलों पर गिरीं, जिन्हें हम आज हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज के नाम से जानते हैं। इन्हीं चार स्थलों पर प्रत्येक तीन वर्ष पर बारी–बारी से कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है।

कुम्भ मेला दुनियाँ में कहीं भी होने वाला सबसे बड़ा सार्वजनिक समागम और आस्था का सामूहिक आयोजन है। लगभग 45 दिनों तक चलने वाले इस मेले में करोड़ों श्रद्धालु गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पवित्र संगम पर स्नान करने के लिए आते हैं। मुख्य रूप से इस समागम में तपस्वी, संत, साधु, साध्वियाँ, कल्पवासी और सभी क्षेत्रों के तीर्थयात्री शामिल होते हैं। कुंभ मेले में सभी धर्मों के लोग आते हैं, जिनमें साधु और नागा साधु शामिल हैं, जो साधना करते हैं और आध्यात्मिक अनुशासन के कठोर मार्ग का अनुसरण करते हैं, संन्यासी जो अपना एकांतवास छोड़कर केवल कुंभ मेले के समय ही सभ्यता का भ्रमण करने आते हैं, अध्यात्म के साधक और हिंदू धर्म का पालन करने वाले आम लोग भी शामिल हैं।

कुंभ मेले के समय अनेक समारोह आयोजित होते हैं, हाथी, घोड़े और रथों पर अखाड़ों का पारंपरिक जुलूस, जिसे 'पेशवाई' कहा जाता है, 'शाही स्नान' के समय चमचमाती तलवारें और नागा साधुओं की रस्में तथा अनेक अन्य सँस्कृतिक गतिविधियाँ, जो लाखों तीर्थयात्रियों को कुंभ मेले में भाग लेने के लिए आकर्षित करती हैं।

महाकुंभ मेला 2025 प्रयागराज में 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित हो रहा है। यह एक हिंदू त्योहार है, जो मानवता का एक स्थान पर एकत्र होना भी है। 2019 में प्रयागराज में अर्ध कुंभ मेले में दुनियाँ भर से 15 करोड़ पर्यटक आए थे। यह सँख्या 100 देशों की संयुक्त आबादी से भी अधिक है। यह वास्तव में यूनेस्को द्वारा

अमूर्त साँस्कृतिक विरासत के रूप में सूचीबद्ध है। कुंभ मेला कई शताब्दियों से मनाया जाता है। प्रयागराज कुंभ मेले का सबसे पहला उल्लेख वर्ष 1600 ई. में मिलता है और अन्य स्थानों पर, कुंभ मेला 14वीं शताब्दी की शुरुआत में आयोजित किया गया था। कुंभ मेला बेहद पवित्र और धार्मिक मेला है और भारत के साधुओं और संतों के लिए विशेष महत्व रखता है। वे वास्तव में पवित्र नदी के जल में स्नान करने वाले पहले व्यक्ति होते हैं। अन्य लोग इन साधुओं के शाही स्नान के बाद ही नदी में स्नान कर सकते हैं। वे अखाड़ों से संबंधित हैं और कुंभ मेले के दौरान बड़ी सँख्या में आते हैं। घाटों की ओर जाते समय जब वे भजन, प्रार्थना और मंत्र गाते हैं, तो उनका जुलूस देखने लायक होता है।

कुंभ मेला प्रयागराज 2025 पौष पूर्णिमा के दिन शुरू होता है, जो 13 जनवरी 2025 को है और 26 फरवरी 2025 को समाप्त होगा। यह पर्यटकों के लिए भी जीवन में एक बार आने वाला अनुभव है। टेंट और कैंप में रहना आपको एक गर्मजोशी भरा एहसास देता है और रात में तारों से भरे आसमान को देखना अपने आप में एक अलग ही अनुभव है। कुंभ मेले में सत्संग, प्रार्थना, आध्यात्मिक व्याख्यान, लंगर भोजन का आनंद सभी उठा सकते हैं। महाकुंभ मेला 2025 में गंगा नदी में पवित्र स्नान कर नागा साधु और उनके अखाड़े से मिलें। निःसंदेह यह कुंभ मेले का नंबर एक आकर्षण है। कुंभ मेले के समय अन्य आकर्षण प्रयागराज में घूमने लायक स्थान हैं, जैसे संगम, हनुमान मंदिर, प्रयागराज किला, अक्षयवट और कई अन्य। वाराणसी भी प्रयागराज के निकट है और हर पर्यटक के यात्रा कार्यक्रम में वाराणसी जाना भी शामिल है।

महाकुम्भ 2025 में आयोजित होने वाले कुछ मुख्य स्नान पर्व निम्न प्रकार हैं –

मुख्य स्नान पर्व	13.01.2025
मकर संक्रान्ति	14.01.2025
मौनी अमावस्या	29.01.2025
बसंत पंचमी	03.02.2025
माघी पूर्णिमा	12.02.2025
महाशिवरात्रि	26.02.2025

प्रयागराज का अपना एक ऐतिहासिक महत्व रहा है। 600 ईसा पूर्व में एक राज्य था और वर्तमान प्रयागराज जिला भी इस राज्य का एक हिस्सा था। उस राज्य को वत्स के नाम से जाना जाता था और उसकी राजधानी कौशाम्बी थी, जिसके अवशेष आज भी प्रयागराज के दक्षिण पश्चिम में स्थित हैं। गौतम बुद्ध ने भी अपनी तीन यात्राओं से इस शहर को सम्मानित किया था। इसके बाद यह क्षेत्र मौर्य शासन के अधीन आ गया और कौशाम्बी को सम्राट अशोक के एक प्रांत का मुख्यालय बनाया गया। उनके निर्देश पर कौशाम्बी में दो अखंड स्तम्भ बनाए गए, जिनमें से एक को बाद में प्रयागराज में स्थानांतरित कर दिया गया। प्रयागराज राजनीति और शिक्षा का केंद्र रहा है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय को पूरब का ऑक्सफोर्ड कहा जाता था। इस शहर ने देश को तीन प्रधानमंत्रियों सहित कई राजनीतिक हस्तियाँ दी हैं। यह शहर साहित्य और कला के केंद्र के साथ–साथ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का भी केंद्र रहा है।

प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुम्भ का आध्यात्मिक महत्व तो है ही, साथ ही आज के परिप्रेक्ष्य में इस महाकुम्भ का आर्थिक महत्व भी है। प्रत्येक 3 वर्षों के अंतराल पर आयोजित होने वाले कुम्भ के मेले में करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु ईश्वर की पूजा अर्चना हेतु प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में पहुँचते हैं। प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुम्भ की 44 दिनों की इस इस पूरी अवधि में प्रतिदिन एक करोड़ श्रद्धालुओं के भारत एवं अन्य देशों से प्रयागराज पहुँचने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है, इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालुगण उक्त 44 दिनों की अवधि में प्रयागराज पहुँचेंगे। करोड़ों की सँख्या में पहुँचने वाले इन श्रद्धालुगणों द्वारा इन तीर्थस्थलों पर अच्छी खासी मात्रा में खर्च भी किए जाने की सम्भावना है। जिससे विशेष रूप से स्थानीय अर्थव्यवस्था को तो बल मिलेगा ही, साथ ही करोड़ों की सँख्या में देश में रोजगार के नए अवसर भी निर्मित होंगे एवं होटल उद्योग, यातायात उद्योग, पर्यटन से जुड़े व्यवसाय, स्थानीय स्तर के छोटे–छोटे उद्योग एवं विभिन्न उत्पादों के क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यापारियों के व्यवसाय में भी अतुलनीय वृद्धि होगी। इस प्रकार, देश की अर्थव्यवस्था को भी, महाकुम्भ मेले के आयोजन से बल मिलने की भरपूर सम्भावना है।

(केंद्र सरकार एवं उत्तरप्रदेश सरकार की महाकुम्भ मेले से सम्बंधित वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी का उपयोग इस लेख में किया गया है।)

prahlad.sabnani@gmail.com

वीर सावरकर कॉलेज के नाम पर विवाद क्यों ?

प्रो. महेश चंद गुप्ता

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में दिल्ली यूनिवर्सिटी में महान स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर वीर सावरकर के नाम पर नए कॉलेज की आधारशिला रखी। इसी के साथ सावरकर के नाम पर राजनीति शुरू हो गई है। काँग्रेस ने सावरकर के नाम पर विरोध जताना शुरू कर दिया है। काँग्रेस इस कॉलेज का नाम पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नाम पर रखने की वकालत कर रही है, जबकि वामपंथी कॉलेज का नाम देश की पहली अध्यापिका सावित्री बाई फुले के नाम पर रखे जाने के पक्ष में हैं। बड़ा प्रश्न है कि आखिर वीर सावरकर के नाम पर काँग्रेस परेशान क्यों हो उठती है ?

देश में दशकों तक सत्ता सुख भोगती रही काँग्रेस के नेता केन्द्र में मोदी सरकार बनने के बाद से बुरी तरह निराश और हताश हैं। वह सत्ता में वापसी के लिए जितने तड़फड़ा रहे हैं, हकीकत में सत्ता, उनसे उतनी ही दूर होती जा रही है। जब काँग्रेस पार्टी सरकार में थी, तो उसने लंबे समय तक देश की राजनीति को नेहरू–गाँधी परिवार के हिसाब से आकार दिया। काँग्रेस ने जिस तरह परिवारवाद को बढ़ावा दिया, देश की सँस्थाओं के नामकरण में पक्षपात किया और सरदार पटेल, अंबेडकर और लालबहादुर शास्त्री जैसे नेताओं को हाशिए पर धकेला, उस बारे में सब जानते हैं। काँग्रेस में पहले जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी छाए रहे और अब सोनिया गाँधी और राहुल गाँधी का वर्चस्व साफ दिखाई देता है। इससे पार्टी के भीतर प्रतिभावान नेताओं के लिए आगे बढने का अवसर सीमित हो गया है। केवल गाँधी परिवार के नाम पर राजनीति करने की कोशिश में काँग्रेस न केवल बुरी तरह पस्त हुई है, बल्कि रसातल में चली गई है।

जब तक काँग्रेस सत्ता में रही, देश की तमाम सँस्थाओं, योजनाओं और कार्यक्रमों के नाम गाँधी–नेहरू परिवार के सदस्यों पर ही रखे जाते रहे। अगर केवल दिल्ली में ही इस नामों पर गौर करते हैं, तो जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, कमला नेहरू कॉलेज, इंदिरा गाँधी नेशनल कल्चरल सेंटर, राजीव गाँधी कैंसर हॉस्पिटल, इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, राजीव चौक, राजीव गाँधी भवन और न जाने कितनी ही सडकें, अन्य भवन, चौक–चौराहे वगैरह नजर आते हैं, जिनका नामकरण काँग्रेस के नेताओं के नाम पर ही किया गया है। केन्द्र और विभिन्न राज्य सरकारों की तमाम योजनाओं का नामकरण भी नेहरु–गाँधी परिवार के नाम पर ही किया जाता रहा है। काँग्रेस नेताओं का यह महिमामंडन हमारे महान स्वाधीनता सेनानियों और अन्य बड़े नेताओं को दरकिनार करके किया गया है।

वैसे तो हर गैर काँग्रेसी नेता के नाम पर किसी भवन, संस्था या योजना का नाम रखे जाने से काँग्रेस तिलमिला उठती है, लेकिन वीर सावरकर के नाम पर काँग्रेस नेता सबसे ज्यादा परेशान हो उठते हैं। वस्तुतः तुष्टिकरण के खेल में माहिर काँग्रेस को हिंदुत्व से खास चिढ़ है। यही कारण है कि काँग्रेस को उन महान क्रांतिकारियों एवं नेताओं का नाम तक नहीं सुहाता, जो हिंदुत्व का प्रतीक बन चुके हैं। हाल यह है कि काँग्रेस के एक छोटे कार्यकर्ता से लेकर राहुल गाँधी तक सभी वीर सावरकर की आलोचना करने में लगे रहते हैं। काँग्रेस को एक बार भी सावरकर पर अँग्रेजों से माफी मांगने, औपनिवेशिक अधिकारियों की चाटुकारिता करने और महिलाओं का अपमान करने जैसे आरोप लगाकर उनकी छवि खराब करते हुए संकोच नहीं हुआ है, लेकिन काँग्रेस के विषवमन के बावजूद राष्ट्रवादी जनता देश की आजादी के लिए पूरा जीवन खपा देने वाले सावरकर के आगे श्रद्धावनत होती है। काँग्रेस के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं है कि अगर वीर सावरकर

देश की आजादी के लिए नहीं लड़ रहे थे, तो अंग्रेजों ने उन्हें दो बार उम्रकैद का दंड क्यों दिया? आखिर किसलिए सावरकर को काले पानी की सजा देकर अंडमान की काल कोठरियों में रखा जाता रहा ? क्यों सावरकर पर निर्मम जुल्म किए जाते रहे ? काँग्रेस जब तक सत्ता में रही, उसने सावरकर जैसे महान नेताओं की शौर्य गाथा को जनता के सामने नहीं आने दिया। उसने नेहरू को ही 'युगपुरुष' साबित करने के लिए अपना समूचा जोर लगा दिया। लेकिन काँग्रेस के पास इस बात का भी कोई जवाब नहीं है कि आखिर नेहरू को कभी काले पानी की सजा देकर काल कोठरी में क्यों नहीं भेजा गया ?

काँग्रेस ने कभी भी सावरकर और उन जैसे अन्य महान स्वाधीनता सेनानियों को वह गौरव प्रदान नहीं किया, जिसके वह हकदार थे और आज जब एक कॉलेज का नामकरण सावरकर के नाम पर किया गया है, तो यह भी उनसे हजम नहीं हो रहा है।

देश के लोग अब काँग्रेस के तुष्टिकरण और वीर सावरकर के विराट व्यक्तित्व में अंतर करना जान गए हैं। लोगों को पता है कि काँग्रेस हिंदुत्व एवं हिंदुत्ववादी नेताओं का विरोध अपनी तुष्टिकरण की नीति के कारण ही करती आ रही है। लोग इसे भूले नहीं है कि वर्ष 2003 में पुराने संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में सावरकर का चित्र लगाने का भी काँग्रेस ने जमकर विरोध किया था। काँग्रेस ने तब यह तर्क दिया था कि सावरकर एक सांसद नहीं थे, इसलिए उनका चित्र संसद भवन में नहीं लगाया जाना चाहिए। जबकि सत्य यह है कि उससे पहले महात्मा गाँधी और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के चित्र उनके सांसद न होने के बाद भी संसद में लगाए जा चुके थे। साफ है कि एक हिंदुत्ववादी महान नेता का चित्र संसद में लगाए जाने पर काँग्रेस को आपत्ति थी।

काँग्रेसी और वामंपथियों का मानना है कि कॉलेज का नामकरण सावरकर के नाम पर करने के पीछे वर्तमान राजनीतिक वातावरण में ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने का उद्देश्य है। कहा जा रहा है कि ऐसा करके अपनी विचारधारा को शिक्षा के क्षेत्र में थोपने की कोशिश की जा रही है। पर सवाल यह भी है कि देश में लोग राष्ट्रवादी विचारधारा पर न चलें, तो क्या तुष्टिकरण के उस मार्ग पर चलें, जिसे काँग्रेस पसंद करती है? यह भी कहा जा रहा है कि शिक्षा सँस्थानों को राजनीति से अलग रखा जाना चाहिए। ऐसे नामकरण शिक्षा के उद्देश्य को प्रभावित करेंगे। प्रश्न यह है कि जब नेहरू और इंदिरा गाँधी के नाम पर विश्वविद्यालयों का नामकरण किया गया तो क्या उससे शिक्षा का उद्देश्य नहीं प्रभावित हुआ होगा?

सावरकर के नाम पर कॉलेज के नामकरण किए जाने पर प्रलाप करके काँग्रेस सिर्फ राजनीति कर रही है। उनके नाम पर कॉलेज का नामकरण होना एक स्वाधीनता सेनानी के रूप में वीर सावरकर का सम्मान और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है, जो बारम्बार किया जाना चाहिए। जिन सावरकर ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए अपना जीवन समर्पित किया, उन्हें यह सम्मान बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। काँग्रेस एवं वामपंथी भले ही इस मामले पर राजनीति कर रहे हों, लेकिन इस संबंध में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का कथन ध्यान देने योग्य है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय फाउंडेशन के प्रथम 'समर्पण समारोह' को संबोधित करते हुए सही कहा है कि सावरकर एक महान राष्ट्रवादी थे, लेकिन समाज का एक वर्ग औपनिवेशिक मानसिकता वाला है, जिससे डी.यू. कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखे जाने पर आपत्ति है। प्रधान ने कहा कि हम इतिहास को बदलना नहीं चाहते, बल्कि इतिहास को बड़ा करना चाहते हैं। इतिहास भविष्य के लिए दर्पण होता है और डी.यू. इसमें बड़ी भूमिका निभा रहा है।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री का कहना पूर्णतया सही है। अगर हम सावरकर जैसे महान क्रांतिकारियों पर गर्व करेंगे, तो निश्चय ही हमारा इतिहास बड़ा होगा और उसका गौरव बढ़ेगा। सिर्फ एक कॉलेज ही क्यों, देश में विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, प्रतिष्ठित सँस्थानों, सँस्थाओं, स्कूलों, हवाई अड्डों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों का नामकरण भी सावरकर और अन्य महापुरुषों तथा स्वाधीनता सेनानियों के नाम पर किया जाना चाहिए। इससे जहाँ महान विभूतियों का अभिनंदन होगा, वहीं हमारी युवा पीढ़ी को एक दिशा मिलेगी। काँग्रेस के राज में वामपंथियों द्वारा इतिहास को तोड़ा–मरोड़ा जाता रहा है। विदेशी आक्रांताओं को महान बताया जाता है। इसके विपरीत आज अगर भाजपा के शासन में सावरकर को यह सम्मान दिया जा रहा है, तो यह समूचे देशवासियों के लिए गर्व का विषय है। निश्चय ही वीर सावरकर का नाम विद्यार्थियों को प्रेरित करेगा और उन्हें अपने इतिहास के प्रति जागरूक बनाएगा। सावरकर के नाम पर कॉलेज का नामकरण ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के सही मूल्यांकन का प्रतीक है। इसे निरर्थक बहस और विवाद का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए।

(लेखक प्रख्यात शिक्षा विद्, चिंतक और वक्ता हैं। वह 44 सालों तक दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहे हैं।)

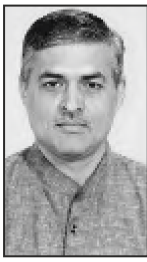

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल

गतांक से आगे.....

विजय कुमार

समाज सुधार की ओर बढ़ता संघ

व्यक्ति की तरह हर सँस्था की भी एक यात्रा होती है। व्यक्ति के चिंतन में उसकी अवस्था के अनुसार कई पड़ाव आते हैं। संघ ने भी गत सौ वर्षों में दो मुख्य पड़ाव पार किए हैं और अब तीसरे की ओर बढ़ रहा है।

पहला चरण : जमीनी विस्तार

– डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 27 सितम्बर, 1925 (विजयादशमी) पर नागपुर में अपने घर पर आयोजित एक बैठक में संघ की स्थापना की। तब उनके साथ नागपुर के 15–20 लोग थे। कुछ दिन बाद पहली शाखा शुरू हुई और इस तरह काम बढ़ने लगा। डॉ. हेडगेवार पहले काँग्रेस में थे। देश के कई लोगों से उनका संपर्क था। चिकित्सा की पढ़ाई उन्होंने कोलकाता से की थी। अपने सहपाठियों से भी उन्होंने संपर्क बनाए रखा। नागपुर की शाखा मजबूत होने पर वे पुराने मित्रों से मिले और उन्हें संघ के बारे में बताया। फिर एक बुजुर्ग कार्यकर्ता बाबासाहब आप्टे को कई जगह भेजा। इससे कुछ शाखाएँ खड़ी हुईं; पर उनके ध्यान में आया कि जब तक युवा नहीं जुड़ेंगे, तब तक काम नहीं बढ़ेगा। इसके लिए उन्होंने उन छात्रों को चुना, जो अब डिग्री की पढ़ाई करना चाहते थे। डॉ. जी ने उन्हें प्रेरित किया कि वे अन्य राज्यों में जाकर पढ़ें। इन छात्रों के बल पर संघ का काम फैला। डॉ. जी ऐसी शाखाओं पर प्रवास भी करते थे। 1940 में उनके निधन के समय सभी राज्यों में संघ पहुँच चुका था।

उनके बाद 34 वर्षीय श्री माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) सरसंघचालक बने। 1973 में उनके देहांत के समय अधिकांश जिलों में संघ पहुँच गया था। फिर श्री बालासाहब देवरस सरसंघचालक बने। 1975 के आपातकाल में संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। संघ ने इस चुनौती का सामना किया और 1977 में प्रतिबंध हट गया। इसके बाद संघ कार्य की वृद्धि का दूसरा दौर शुरू हुआ।

दूसरा चरण : संघ का फैलाव

– अब संघ ने सभी दिशाओं में बढ़ने का निर्णय लिया। वस्तुतः शाखा की रचना कुछ ऐसी है कि उसमें सब लोग नहीं आ सकते। अतः किसान, मजदूर, वनवासी, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, छात्र, शिक्षा, सहकार, महिला, धर्म, साहित्य, कला, चिकित्सा, सेवा आदि क्षेत्रों में स्वयंसेवकों ने सँस्थाएँ बनायीं। कुछ पूर्णकालिक प्रचारक भी इनमें भेजे गये। आज विश्व हिन्दू परिषद, विद्या भारती, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय जनता पार्टी, वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, भारतीय किसान संघ, राष्ट्र सेविका समिति.. आदि बाकी सँस्थाओं से मीलों आगे हैं। उनकी आवाज हर जगह सुनी जाती है।

ऐसी सँस्थाएँ प्रायः किसी राजनीतिक दल या नेता की पिछलग्गू होती हैं। कुछ किसी राज्य या जिले तक सीमित हैं। संघ ने शुरू से ही ध्यान रखा कि ये सँस्थाएँ स्वतंत्र, स्वावलम्बी तथा देशव्यापी हों। जैसे परिवार में चार भाइयों के अलग काम, नौकरी, खेती आदि होने पर भी सुख–दुःख में सब एक रहते हैं। ऐसे ही इनके मूल में संघ विचार होने से ये एक परिवार की तरह काम करते हैं।

तीसरा चरण : समाज सुधार –

अपने शताब्दी वर्ष में संघ ने तीसरे चरण में प्रवेश किया है। इसके अंतर्गत समाज में सुधार और परिवर्तन की बात हो रही है; पर केवल बातों से कुछ नहीं होता, जब तक कुछ कार्यक्रम न हों। इसके लिए पाँच विषयों पर काम हो रहा है।

1. परिवार प्रबोधन : आजकल परिवार के बिखराव पर सब चिंता व्यक्त कर रहे

हैं। छोटे परिवार और उसमें भी बिखराव से जीवन दूभर हो गया है। टी.वी. और मोबाइल ने एक छत के बावजूद सबको अकेला कर दिया है। इसलिए भाषा, भूषा, भोजन, भजन, भवन और भ्रमण जैसे छह सूत्र दिए गए हैं।

भाषा का अर्थ है घर में अपनी भाषा और बोली का प्रयोग करें। कामकाजी दुनियाँ के बाद घर, उत्सव या पर्वों आदि में अपनी परम्परागत वेशभूषा पहनें। रात का भोजन सब साथ करें। सप्ताह में एक बार मिलकर पूजा आदि करें। घर का परिवेश भारतीयता से ओतप्रोत हो तथा साल में एक बार पूरा परिवार एक साथ घूमने जाएँ। इन छह बिन्दुओं से हजारों परिवार टूटने से बचे हैं।

2. पर्यावरण संरक्षण : इसके लिए पेड़, पानी और प्लास्टिक की बात कही जा रही है। पौधे लगाकर पेड़ बनने तक उनका संरक्षण करें। पानी का सीमित और बार–बार प्रयोग करें तथा एकबारी (सिंगल यूज) प्लास्टिक को हटाएँ। इसके लिए आगामी प्रयागराज के महाकुंभ में 'एक थाली एक थैला' अभियान लिया गया है। श्रद्धालुओं से आग्रह किया जा रहा है कि वे थैला और थाली साथ रखें। सामान थैले में लें तथा अपनी थाली में ही खाना खाएँ, जिससे कूड़ा न हो।

3. सामाजिक समरसता : यों तो संवैधानिक रूप से हर भारतीय समान हैं; पर व्यवहार में आज भी जातिगत भेदभाव जारी है। संघ का मानना है कि जैसे शरीर के हर अंग का आकार और काम अलग है, फिर भी वे एक हैं। ऐसे ही अनेक भिन्नताओं के बावजूद पूरा हिन्दू समाज एक है। इसकी मजबूती के लिए अनेक कार्यक्रम किए जाते हैं।

4. स्वदेशी : जिस वस्तु का निर्माण भारतीयों द्वारा हो तथा जिसका लाभ भारत में ही रहे, मोटे रूप से उसे स्वदेशी कहते हैं। किसी समय अरबों–खरबों रु. का सामान इंग्लैंड या अमरीका से आता था। अब चीन निर्मित माल की भरमार है। इससे देश का धन बाहर जाता है और उसका दुरुपयोग हमारे ही विरुद्ध होता है। अतः हम अधिकतम सामान स्वदेशी कंपनियों का लें, इसके लिए लोगों का मन बनाने का प्रयास होता है।

5. नागरिक कर्तव्य : संविधान ने हमें कई अधिकार दिए हैं, तो उसके साथ कुछ कर्तव्य भी हैं; पर प्रायः हम कर्तव्य की ओर से उदासीन रहते हैं। सफाई, सड़क के नियम, समय पालन, लाइन न तोड़ना आदि ऐसे ही विषय हैं। इनसे हमारा और दूसरों का जीवन सुखद बन सकता है। इस बारे में जागरूकता का प्रयास संघ कर रहा है।

यद्यपि समाज में सुधार आसान नहीं है। किसी व्यवस्था को बिगड़ने में यदि 50 साल लगते हैं, तो उसे सुधारने में 100 साल लगेंगे; पर कहीं से तो शुरू करना ही होगा। इसलिए संघ ने यह काम हाथ में लिया है। संघ को इसमें भी सफलता मिलेगी, यह निश्चित है। .

संघ की उपलब्धि

किसी भी सँस्था की समीक्षा करते समय उसकी उपलब्धियाँ देखनी चाहिए। संघ को सौ साल पूरे हो रहे हैं। ऐसे में उसकी उपलब्धियों की चर्चा जरूरी है। संघ के सँस्थापक डॉ. हेडगेवार कहते थे कि भारत मूलतः हिन्दू राष्ट्र है। देश और हिन्दू समाज की उन्नति, अवनति, सुख और दुःख समान हैं। यदि हिन्दू जागृत और संगठित हुए, तो देश आजाद होगा और उन्नति भी करेगा। उन्होंने देखा कि आजादी के प्रयास तो सब ओर हो रहे थे; पर एकसूत्रता न होने से वे शीघ्र ही दबा दिए जाते थे। काँग्रेस का प्रभाव पूरे देश में था; पर वहाँ मुस्लिम तुष्टीकरण जारी था। गाँधी जी सर्वमान्य नेता थे; पर वे नेहरू के सामने चुप हो जाते थे। अतः गोहत्या, उर्दू, वंदे मातरम्, भगवा झंडा, धर्मान्तरण, मजहबी दंगे, देश की अखंडता...आदि पर काँग्रेस की नीति मुसलमानों के सामने समर्पण की रही।

इसलिए डॉ. हेडगेवार सदा स्वाधीनता, हिन्दुओं के जागरण और संगठन की बात कहते थे। अतः संघ की उपलब्धि को इस परिप्रेक्ष्य में ही देखना होगा। उन दिनों आजादी के लिए बम–गोली वाला क्रांति मार्ग था या काँग्रेस का अहिंसा पथ। डॉ. हेडगेवार दोनों पर चले। फिर उन्हें दूसरा अधिक ठीक लगा। अतः वे स्वयं दो बार (1921, 1930) तथा उनका अनुकरण करते हुए हजारों स्वयंसेवक जेल गये; पर उनके नाम काँग्रेस की सूची में ही हैं। अधिकांश स्वयंसेवकों ने आजादी के बाद ताम्रपत्र या पेंशन आदि भी नहीं ली, चूंकि वे देशसेवा के बदले कुछ लेना ठीक नहीं मानते थे। उन दिनों स्वयंसेवक अपनी प्रतिज्ञा में देश को स्वाधीन कराने की बात कहते थे।

यदि कोई गहरी नींद में हो तो घर में घुसकर चोर सब माल ले जाएंगे; पर यदि मालिक जाग रहा हो, तो वह उन्हें मार–पीटकर पुलिस के हवाले कर देगा। यही स्थिति सुप्त हिन्दू समाज की थी। हजारों वर्षों के विदेशी और विधर्मी हमलों ने उनका मनोबल गिरा दिया था। धर्मान्तरण का बाजार गरम था। लोग हिन्दू कहने में शरमाते थे। यों तो हिन्दुओं की हजारों धार्मिक और सामाजिक सँस्थाएँ थीं; पर वे किसी राज्य, जिले, जाति, वर्ग, भाषा या पंथ

तक सीमित थीं। कई तो खंडन–मंडन और दूसरों को झुकाकर अपना झंडा बुलंद करने में ही लगी रहती थीं।

ऐसे में संघ ने जाति, भाषा, वर्ग, संप्रदाय और क्षेत्र से ऊपर उठकर पूरे हिन्दू समाज को जगाया। इसके लिए दैनिक मिलन का 'शाखा' नामक अभिनव प्रयोग शुरू हुआ। उसका परिणाम है कि आज हिन्दू समाज को चोट पहुँचाने वाले किसी भी विषय पर लोग तुरंत सड़क पर आ जाते हैं। अतः देश, धर्म और समाज विरोधी तत्वों को पीछे हटना पड़ता है।

हिन्दू लड़कियों का अपहरण, गोहत्या, मंदिर विध्वंस, तीर्थयात्राओं पर हमले पहले भी होते थे; पर लोग चुप रहते थे। केन्द्र और राज्यों की काँग्रेसी सरकारें मुस्लिम वोट के लालच में सिर झुका लेती थीं। अतः पुलिस, प्रशासन और न्यायालय भी आँखें मूंद लेता था; पर अब हिन्दू जागृति के कारण सरकारें बदली हैं। अतः पुलिस, प्रशासन और न्यायालय भी त्वरित कार्यवाही करता है। पुलिस के डंडे, जेल और बुलडोजर के भय से गुंडे और माफिया चुप हैं। यह संघ के सौ वर्षों के हिन्दू जागरण का सुखद परिणाम है।

लेकिन कोई भी जागरण बिना संगठन के नहीं होता। इसलिए डॉ. हेडगेवार ने संगठन पर जोर दिया। लोग पूछते थे कि संगठन किसलिए कर रहे हो, तो वे कहते थे कि जैसे शरीर स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम जरूरी है, ऐसे ही देश और समाज के स्वास्थ्य के लिए संगठन जरूरी है। 50 वर्षों तक संघ ने केवल जमीनी संगठन पर ध्यान दिया। इससे हजारों प्रचारक और स्थानीय कार्यकर्ता तैयार हुए। उनके बल पर फिर समाज जीवन के हर क्षेत्र में नयी सँस्थाओं का गठन हुआ।

किसी धर्मस्थल पर दूर से मंदिर का ध्वज ही दिखता है। फिर क्रमशः दीवारें और देवप्रतिमा मिलती है। आज भा.ज.पा की सरकार केन्द्र और कई राज्यों में है। लोग उसे ही संघ समझते हैं; पर संघ तो दीवार, देव प्रतिमा और उससे भी अधिक नींव के पत्थरों में निहित है। दीपावली की केन्द्रीय बैठक के अनुसार इस समय 72,354 दैनिक शाखा और 29,369 साप्ताहिक मिलन हैं। इसके साथ 11,385 मासिक संघ मंडली और 1,30,032 सेवा कार्य भी हैं। नीचे से लेकर केन्द्रीय स्तर तक 3,500 प्रचारक हैं, जो प्रत्यक्ष शाखा या विविध कार्य में मौन साधना कर रहे हैं। जन्मशती वर्ष में 910 कार्यकर्ता एक वर्ष का समय देने के लिए आगे आए हैं। देश का कोई जिला संघ कार्य से अछूता नहीं है। विदेश में जहाँ भी हिन्दू हैं, वहाँ किसी अन्य नाम से स्वयंसेवक सक्रिय हैं। यदि फिर पहले प्रश्न की ओर लौटें, तो डॉ. हेडगेवार ने केवल हिन्दू जागरण और संगठन की बात कही थी; पर आज शाखा के अलावा जो सैकड़ों विविध सँस्थाएँ और लाखों सेवा कार्य हैं, वे इस जागरण और संगठन की स्वाभाविक फलश्रुति (प्रोग्रेसिव अनफोल्डमेंट) हैं। ये सब समुद्र में तैरते विशाल हिमखंड के ऊपरी हिस्से की तरह हैं, जो 10 प्रतिशत से भी कम होता है। शेष समुद्र के अंदर अदृश्य रहता है। संघ का 90 प्रतिशत हिस्सा भी उसका विचार और संगठन है।

पहले प्रायः देशविरोधी सँस्थाएँ ही संघ का विरोध करती थीं; पर अब वे राजनीतिक दल और नेता भी छाती पीट रहे हैं, जिनकी पुश्तैनी दुकानें बंद होने लगी हैं। संघ को गाली दिए बिना उनका पेट साफ नहीं होता। किसी भी संगठन की यात्रा उपेक्षा, उपहास, विरोध, समर्थन और समर्पण जैसे कई चरणों से गुजरती है। संघ उपेक्षा और उपहास को पार चुका है। अब कुछ जगह उसका विरोध है, तो अधिकांश जगह समर्थन। आगे समर्पण की बारी है। यह संघ की सौ वर्षीय यात्रा की बड़ी उपलब्धि है।

vj.kumar.1956@gmail.com

पुण्यश्लोकी अहिल्या देवी होल्कर का जीवन प्रेरणादायी : डॉ. शोभा रानी सिंह

रोहतास (बिहार)। 28 दिसम्बर 2024 को रोहतास जिले के सासाराम में विश्व हिंदू परिषद की महिला इकाई दुर्गावाहिनी व मातृशक्ति द्वारा मानवंदन यात्रा का आयोजन किया गया, इस यात्रा में 500 बहनों ने हिस्सा लिया। इस यात्रा के उपलक्ष्य में अनेक बहनों ने दंड व तलवार के माध्यम से साहसिक प्रदर्शन भी किया।

मुख्य अतिथि डॉ. शोभा रानी सिंह ने कहा कि भारतीय महिलाओं ने इतिहास में वह स्थान अर्जित किया है, जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं हुआ। महारानी अहिल्याबाई होल्कर का व्यक्तित्व और कृतित्व उन्हें विश्व की महान महिलाओं की श्रेणी में अग्रणी बनाता है। उनके कार्यों का भारतीय इतिहास और जनमानस पर विशेष प्रभाव रहा है।

अहिल्या बाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के चौड़ी गाँव में हुआ था। वे मराठा साम्राज्य की एक सम्माननीय शासक थीं, जिन्होंने अपनी वीरता, धार्मिकता और प्रशासनिक कुशलता से न केवल अपने राज्य को सशक्त किया, बल्कि समाज सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके शासनकाल में राज्य की आर्थिक और साँस्कृतिक उन्नति हुई। उन्होंने भारत के विभिन्न तीर्थ स्थलों पर मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। काशी विश्वनाथ मंदिर समेत देशभर के मंदिरों और घाटों के पुनर्निर्माण का कार्य भी उन्होंने किया।

अहिल्याबाई एक कुशल सैन्य नेता

भी थीं, जिन्होंने कई युद्धों में भाग लिया और अपनी रणनीति तथा वीरता से मराठा साम्राज्य की रक्षा की। उनके शासनकाल में इंदौर राज्य एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य बना। उनके धार्मिक और सामाजिक कार्यों ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी।

पीली सरसों का बहुआयामी महत्व

परंपरा, आध्यात्मिकता और पोषण का मिश्रण

डॉ. आनंद मोहन

सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, आलोक मोहन

पीली सरसों, रसोई के मसाले से अधिक यह परंपरा, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य का प्रतीक है। हिंदू अनुष्ठानों में सम्मानित और अपने असाधारण पोषण गुणों के लिए मनाया जाता है, पीली सरसों प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के एक अद्वितीय प्रतिच्छेदन का प्रतीक है।

हिंदू सँस्कृति और आध्यात्मिकता में पीली सरसों –

पीली सरसों हिंदू सँस्कृति और आध्यात्मिकता में एक पवित्र स्थान रखती है। यह देवी दुर्गा, देवी काली और राहु ग्रह जैसे देवताओं से जुड़ा हुआ है, जो दिव्य संरक्षण और इच्छाओं की पूर्ति का प्रतीक है। पूजा और हवन जैसे धार्मिक समारोहों के दौरान सरसों के बीज आमतौर पर आशीर्वाद देने, नकारात्मकता को खत्म करने और शांति और समृद्धि लाने के लिए पेश किए जाते हैं। नवरात्रि के दौरान सरसों का उपयोग विशेष रूप से प्रमुख है, देवी दुर्गा को समर्पित एक त्योहार, जहाँ इसका उपयोग शुद्धि और शक्ति के प्रतीक के रूप में किया जाता है।

अनुष्ठान और सफाई प्रथाओं में भूमिका

पीली सरसों का आध्यात्मिक महत्व धर्मशास्त्र सहित प्राचीन हिंदू शास्त्रों में गहराई से निहित है। ये ग्रंथ लिनन के कपड़ों को शुद्ध करने में सरसों के मिश्रण की भूमिका पर जोर देते हैं, जो स्वच्छता और अनुष्ठान शुद्धता के साथ इसके सहयोग को दर्शाता है। पारंपरिक हिंदू घरों में, नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर भगाने और आध्यात्मिक पवित्रता सुनिश्चित करने के लिए शुभ अवसरों के दौरान सरसों के बीज घर में और उसके आसपास छिड़के जाते हैं। पूजा के दौरान सरसों के तेल के दीपक भी जलाए जाते हैं, जो अंधकार और अज्ञानता के उन्मूलन के प्रतीक हैं।

विश्वास के साथ सरसों के बीज का संबंध गहरा है। हिंदू दर्शन में, यह परिवर्तन की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। जिस तरह एक छोटा–सा बीज फलता–फूलता पौधा बनता है, उसी तरह छोटे होने पर भी विश्वास में बढ़ने, प्रेरणा देने और चुनौतियों पर काबू पाने की ताकत होती है। इस प्रतीकात्मक अर्थ ने पीली सरसों को कई आध्यात्मिक प्रथाओं में आधारशिला बना दिया है।

पारंपरिक चिकित्सा और ज्योतिषीय महत्व

पीली सरसों सदियों से पारंपरिक चिकित्सा की आधारशिला रही है। ऐसा माना जाता है कि इसमें शुद्धिकरण और उपचार गुण होते हैं, जो विभिन्न बीमारियों को कम कर सकते हैं। सरसों के बीज को पीसकर मिश्रण बनाकर बनाई गई सरसों की पुल्टिस का उपयोग दर्द, सूजन और श्वसन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए किया गया है। सरसों के वार्मिंग गुणों का उपयोग आयुर्वेद में शरीर के दोषों को संतुलित करने और रक्त परिसंचरण को प्रोत्साहित करने के लिए भी किया जाता है। वैदिक ज्योतिष में सरसों को ग्रहों के संरेखण के हानिकारक प्रभावों को कम करने की क्षमता के लिए सम्मानित किया जाता है, विशेष रूप से राहु से जुड़े लोगों को। सरसों के बीज छिड़कने या सरसों के तेल का उपयोग करने वाले अनुष्ठानों को नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करने, सद्भाव को बढ़ावा देने और किसी के जीवन में संतुलन बहाल

करने में प्रभावी माना जाता है। यह ज्योतिषीय महत्व आध्यात्मिक और साँस्कृतिक संदर्भों में एक रक्षक और शोधक के रूप में सरसों की भूमिका को पुष्ट करता है।

पीली सरसों की रासायनिक संरचना और स्वास्थ्य लाभ

पीली सरसों सिर्फ एक आध्यात्मिक और साँस्कृतिक तत्व नहीं है, यह एक पोषण खजाना निधि भी है। इसके बीज आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जो समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान करते हैं। पीली सरसों के बीज लगभग 36.73 प्रतिशत की प्रभावशाली प्रोटीन सामग्री से युक्त हैं, जिससे वे उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का एक उत्कृष्ट स्रोत बन जाते हैं। इन प्रोटीनों में सभी आवश्यक अमीनो एसिड शामिल है, जैसे लाइसिन, वेलिन और सुगंधित अमीनो एसिड जैसे फेनिलएलनिन और टायरोसिन, जो एफएओ/डब्ल्यूएचओ मानकों से अधिक हैं। यह सरसों को आहार अनुप्रयोगों के लिए एक मूल्यवान घटक बनाता है, विशेष रूप से शाकाहारियों और पौधे–आधारित प्रोटीन स्रोतों की तलाश करने वालों के लिए। पीली सरसों के फैटी एसिड प्रोफाइल में लिनोलिक एसिड (12.37 प्रतिशत), लिनोलेनिक एसिड (12.0 प्रतिशत), और ओलिक एसिड (19.08 प्रतिशत) शामिल हैं। ये आवश्यक फैटी एसिड हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखने, सूजन को कम करने और मस्तिष्क समारोह का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। लिनोलिक और लिनोलेनिक एसिड, विशेष रूप से, हृदय रोग और गठिया जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करने के लिए जाने जाते हैं। पीली सरसों में 5.87 प्रतिशत आहार फाइबर होता है, जो नियमित मल त्याग को बढ़ावा देकर और एक स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम को बढ़ावा देकर पाचन स्वास्थ्य का समर्थन करता है। फाइबर सामग्री भी परिपूर्णता की भावना में योगदान देती है, जिससे सरसों वजन प्रबंधन आहार के लिए एक सहायक अतिरिक्त सामग्री बन जाती है।

बायोएक्टिव यौगिक

पीली सरसों ग्लूकोसाइनोलेट्स, विशेष रूप से सिनिग्रिन में समृद्ध है, जो एंजाइमेटिक रूप से एलिल आइसोथियोसाइनेट (एआईटीसी) जैसे बायोएक्टिव यौगिकों में अवक्रमित करता है। एआईटीसी स्वास्थ्य लाभों की एक श्रृंखला प्रदर्शित करता है, जिनमें शामिल हैं यानि की रोगाणुरोधी प्रभाव हानिकारक बैक्टीरिया और कवक के विकास को रोकता है। एंटीऑक्सीडेंट गुण यानि की कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाता है और पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करता है और कैंसर–निवारक प्रभाव, जिसमें यह कोशिकाओं के विकास को रोक सकता है, विशेष रूप से पाचन तंत्र में। ये गुण पीली सरसों को चिकित्सीय क्षमता के साथ एक कार्यात्मक खाद्य घटक बनाते हैं।

पाक अनुप्रयोग : परंपरा से आधुनिकता तक

पीली सरसों की बहुमुखी प्रतिभा इसके पाक अनुप्रयोगों तक फैली हुई है, जहाँ यह स्वाद और बनावट दोनों को बढ़ाती है। सरसों के बीज भारतीय खाना पकाने में एक प्रधान सामग्री है, जिसका उपयोग दाल, करी और अचार जैसे तड़का लगाने वाले व्यंजनों में किया जाता है। इसका तीखा, चटपटा स्वाद व्यंजनों में गहराई जोड़ता है, जबकि सरसों का तेल अपने अनोखे स्वाद के कारण तलने और पकाने के लिए एक पसंदीदा माध्यम है। आधुनिक पाक प्रथाओं में, पीली सरसों का उपयोग सॉस, ड्रेसिंग और मैरिनेड बनाने के लिए किया जाता है। इसके प्रोटीन उत्कृष्ट खाद्य उत्पादों की बनावट और स्थिरता में सुधार करते हैं। ये कार्यात्मक गुण इसे पके हुए मसालों सहित प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के लिए एक आदर्श घटक बनाते हैं।

पीली सरसों को शामिल करने के स्वास्थ्य लाभ

पीली सरसों को दैनिक आहार में शामिल करने से कई स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। प्रोटीन, फाइबर, फैटी एसिड और बायोएक्टिव फाइटोकेमिकल्स का इसका संयोजन स्वास्थ्य के कई पहलुओं का समर्थन करता है, जिनमें शामिल हैं – हृदय स्वास्थ्य, पाचन कल्याण, प्रतिरक्षा समर्थन और पुरानी बीमारी की रोकथाम। पीली सरसों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले गुण इसे आधुनिक आहार प्रथाओं के लिए मूल्यवान बनाते हैं।

निष्कर्ष – पीली सरसों परंपरा, आध्यात्मिकता और पोषण का एक उल्लेखनीय मिश्रण है। हिंदू अनुष्ठानों में इसकी भूमिका, इसके आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करती है, जबकि इसके स्वास्थ्य लाभ और पाक बहुमुखी प्रतिभा आधुनिक जीवन में इसके मूल्य को प्रदर्शित करती है। पीली सरसों की बहुआयामी प्रकृति को अपनाकर, हम इसकी समृद्ध विरासत का सम्मान करते हैं। यह विनम्र बीज प्राचीन ज्ञान और समकालीन जरूरतों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो हमें स्वस्थ और अधिक सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

भिगोई हुई मूंगफली के चमत्कारी फायदे

मूंगफली में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है, जो शारीरिक विकास के लिए बहुत जरूरी है। ऐसे में अगर आप किसी भी कारण से दूध नहीं पी पाते हैं, तो यकीन मानिए मूंगफली का सेवन इसका एक बेहतर विकल्प है। मूंगफली स्वाद में तो बेहतरीन होती है, लेकिन कम लोगों को ही पता होगा कि ये स्वास्थ्य के लिए कितनी फायदेमंद है। प्रायः लोग इसे स्वाद के लिए ही खाते हैं, पर यकीन मानिए, इससे होने वाले फायदे जानकर आप भी चौंक जाएंगे।

मूंगफली भिगोकर ही क्यों खाएँ ?

मूंगफली सेहत के लिए रामबाण है। दरअसल यह वनस्पतिक प्रोटीन का एक सस्ता स्रोत है। हैल्थ रिसर्च में ये बात सामने आ चुकी है कि दूध और अंडे से कई गुना ज्यादा प्रोटीन मुंगफली होता है। मूंगफली में इसके अलावा आयरन, नियासिन, फोलेट, कैल्शियम और जिंक का अच्छा स्रोत है। थोड़े से मूंगफली के दानों में 426 कैलोरीज, 5 ग्राम कार्बोहाईड्रेट, 17 ग्राम प्रोटीन और 35 ग्राम वसा होती है। इसमें विटामिन ई, के और बी–6 भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। साथ ही स्वास्थ्य विशेषज्ञों की मानें तो भिगोई हुई मूंगफली और अधिक फायदेमंद होती है। क्योंकि मूंगफली के दानों को पानी में भिगोने से इसमें मौजूद न्यूटिएंट्स बॉडी में पूरी तरह अब्जार्ब हो जाते हैं।

मूंगफली के बेहतरीन फायदे

- ❖ कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। मूंगफली कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करने में अहम् भूमिका निभाती है। कोलेस्ट्रॉल की मात्रा में 5.1 फीसदी की कमी आती है। इसके अलावा कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन कोलेस्ट्रॉल (एलडीएलसी) की मात्रा में 7.4 फीसदी घटती है
- ❖ अनिद्रा एवं शुगर कंट्रोल करता है। भिगोई हुई मूंगफली के सेवन से शुगर लेवल भी कंट्रोल रहता है, साथ ही ये डायबिटीज से भी बचाती है।
- ❖ मूंगफली में पर्याप्त मात्रा में फाइबर्स होने के कारण ये पाचन शक्ति को बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन के कब्ज की समस्या खत्म हो जाती है। साथ ही गैस व एसिडिटी की समस्या में भी राहत मिलती है।
- ❖ गर्भवती महिलाओं के लिए मूंगफली का नियमित सेवन बहुत अच्छा होता है। इसमें फॉलिक एसिड होता है, जो कि गर्भावस्था में शिशु के विकास में मदद करता है।
- ❖ हार्ट प्रॉब्लम में शोध से यह भी पता चला है कि सप्ताह में पाँच दिन मूंगफली के कुछ दाने खाने से दिल की बीमारियाँ होने का खतरा कम होता है।
- ❖ त्वचा के लिए मूंगफली बेहद फायदेमंद होती है। मूंगफली में ओमेगा–6 फैट भरपूर मात्रा में मिलता है, जो स्वस्थ कोशिकाओं और अच्छी त्वचा के लिए जिम्मेदार है।
- ❖ मूंगफली में टिस्टोफेन होता है, जिस वजह से इसके सेवन से मूड भी अच्छा रहता है। उम्र का प्रभाव कम करता है। मूंगफली में प्रोटीन, लाभदायक वसा, फाइबर, खनिज, विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए इसके सेवन से स्किन उम्र भर जवां दिखाई देती है।
- ❖ मूंगफली का सेवन आंखों के लिए भी फायदेमंद होता है। इसमें बीटी कैरोटिन पाया जाता है, जिससे आँखें स्वस्थ रहती हैं।

(भारतीय धरोहर से साभार)

कुम्भ दुनियाँ का अनोखा उत्सव है : मिलिन्द पराण्डे

विश्व हिन्दू परिषद के प्रयाग महाकुम्भ शिविर में स्थित प्रचार–प्रसार विभाग के महर्षि नारद परिसर का शुभारम्भ मिलिन्द पराण्डे जी ने दीप प्रज्वलन करके किया। मिलिन्द पराण्डे विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संगठन महामंत्री हैं। श्री पराण्डे ने नारद परिसर का उद्‌घाटन करने के उपरान्त पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि विश्व हिन्दू परिषद हिन्दू समाज के संकटों, समस्याओं और चिन्ताओं के निराकरण के लिए काम कर रहा है। यहाँ सेक्टर 18, ओल्ड जीटीरोड, झूंसी स्थित भारद्वाज आश्रम के नाम से स्थापित महाकुम्भ शिविर में अनेक कार्यक्रमों और सम्मेलनों का आयोजन कर रहा है।

मिलिन्द जी ने बताया कि संघ और समाज के सहयोग से विहिप कुम्भ में आये सभी साधु–संतों और श्रद्धालुओं को एक थैला और एक थाली अभियान के अन्तर्गत सैकड़ों–हजारों की सँख्या में थाली उपलब्ध करवा रहा है, जिससे पत्तल और डिस्पोजेबल के कुड़े से प्रयाग नगर और गंगा को बचाया जा सके, पर्यावरण की रक्षा हो सके।

उन्होंने कहा कि हम सामाजिक समरसता के अभियान के अन्तर्गत जनजातीय समाज के संतों को सम्मानित कर रहे हैं, बौद्ध संतों का सम्मेलन, युवा संतों का सम्मेलन कर रहे हैं, साध्वी सम्मेलन कर रहे हैं।

विहिप केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक करता है, जिसमें संत हिन्दू समाज की दिशा तय करते हैं और उसके अनुरूप विहिप हिन्दू समाज की सेवा को तत्पर रहता है। हिन्दू समाज पूरे विश्व को एक परिवार मानता है और हिंसा एवं मतान्तरण को छोड़ दें, तो हमारा किसी से कोई विरोध नहीं है। वसुधैव कुटुम्बकम कहकर पूरी पृथ्वी को अपना परिवार मानता है हिन्दू समाज। ऐसी मान्यता वाले सभी समाज और संत कुम्भ में आये हैं, विश्व हिन्दू परिषद उन सभी की चिन्ता, व्यवस्था करने का प्रयास कर रहा है।

कुम्भ में आये सभी लोगों को हिन्दू समाज निःशुल्क भोजन उपलब्ध करवा रहा है, सभी तरफ दिनरात भण्डारे चलाए जा रहे हैं। सभी शिविरों में यात्रियों को निःशुल्क रहने की सुविधा दी जा रही है।

दुनियाँ में कुम्भ से बड़ा जनसंग्रह कहीं नहीं होता है। एक दिन में दो–ढाई करोड़ लोग स्नान करते हैं और पूरे कुम्भ अवधी में 45 करोड़ लोग स्नान करेंगे। यह दुनियाँ का अनोखा उत्सव है।

इस कार्यक्रम में विहिप के केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री विनायक राव देशपाण्डे, केन्द्रीय संयुक्त महामन्त्री कोटेश्वर शर्मा, केन्द्रीय प्रचार प्रमुख विजय शंकर तिवारी केन्द्रीय सह मंत्री हरिशंकर, बजरंगदल के राष्ट्रीय संयोजक नीरज दौनेरिया, शिविर के मिडिया प्रमुख मुरारी शरण शुक्ल, काशी प्रांत के प्रचार–प्रसार प्रमुख अश्विनी मिश्र, बृजेश मिश्र, विजय कुमार, अमर कुमार उपस्थित रहे।

प्रेषक – अश्वनी मिश्र
प्रांत प्रचार–प्रसार प्रमुख काशी प्रांत

दुर्गा वाहिनी के अभ्यास वर्ग का शुभारम्भ

मातृ शक्ति– दुर्गा वाहिनी का अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग का उद्घाटन सत्र 16 जनवरी 2025 को प्रातःकाल 11 बजे विश्व हिन्दू परिषद के सेक्टर 18 में महाकुम्भ शिविर में स्थित सांदिपनी सभागार में आरम्भ हुआ। यह अभ्यास वर्ग तीन दिनों (16, 17, 18 जनवरी 2025) तक चलेगा। आरम्भ में विहिप के केन्द्रीय सह संगठन मंत्री विनायक राव देशपाण्डे, महिला समन्वय की केन्द्रीय संयोजिका मीनाक्षी ताई पिशवे एवं दुर्गा वाहिनी की राष्ट्रीय संयोजिका प्रज्ञा महाला ने श्रीराम–सीता –लक्ष्मण की कांस्य प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन किया, एकता मंत्र का सामुहिक पाठ हुआ। सत्र का संचालन केन्द्रीय सह संयोजिका दुर्गावाहिनी सरोज सोनी ने किया। दुर्गा वाहिनी की सह संयोजिका पिंकी पंवार ने मंचस्थ अतिथियों का परिचय कराया। प्रस्ताविक भाषण दुर्गा वाहिनी की संयोजिका प्रज्ञा महाला का हुआ। उन्होंने कहा कि कुम्भ में महिला कार्यकर्ताओं को बुलाने का मन हुआ। धर्म रक्षा का भाव मन में लेकर जाना है, सामूहिक टीम वर्क और सेवा का सँस्कार सीखकर जाना है।

विनायक राव देशपाण्डे ने अपने सम्बोधन में कहा कि कार्यकर्ता के विकास के लिए बीच–बीच में प्रशिक्षण वर्ग की आवश्यकता होती है। बाईबल में कहा है कि पुरुष की पसली से औरत का निर्माण हुआ, पुरुष के मनोरंजन के लिए महिला बनी, उसमें जान नहीं है। भारत दुनियाँ में अकेला देश है, जहाँ चराचर जगत में परमात्मा का वास मानते हैं।

उन्होंने कहा कि भारत में संतों की अखंड परम्परा है, लड़ने वाले वीरों की भी परम्परा है। विजयनगर साम्राज्य के कारण दक्षिण भारत अजेय रहा। महाराणा प्रताप के समय में उत्तर भारत अजेय रहा। शिवाजी के नेतृत्व में महाराष्ट्र अजेय रहा। पंजाब में गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में विजय अभियान हुआ। महापुरुषों ने अपने शौर्य और पराक्रम से भारत को सुरक्षित किया। एकत्रित अभियान नहीं चला। एक ही समय में सम्पूर्ण भारत में जागरण की प्रक्रिया नहीं हुई, अन्यथा देश तभी सुरक्षित हो जाता।

देशपांडे ने कहा कि सारे देश में एक ही समय में, एक ही पद्धति से जागरण की प्रक्रिया चले, इसीलिए विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना हुई है। संविधान का पालन करते हुए, संविधान के दायरे में रहते हुए, देश के सभी कोने में राष्ट्र जागरण हो सके, इसीलिए विश्व हिन्दू परिषद काम करता है।

विनायक राव ने कहा कि हिन्दूओं पर अन्याय करना और ईसाई, मुसलमानों को प्रश्रय देना ही आज सेक्युलरिज्म है। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद मिशनरीज वाले भारत से जाने वाले थे, लेकिन सेक्युलर नेताओं ने उन्हें रोक लिया। मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल के समय में नियोगी कमीशन आया मध्य भारत प्रांत में। उससे धर्मांतरण की विभीषिका का पता पूरे देश को हुआ। राजनीतिक लोगों के इशारे पर देशभर में

भाषा के आधार पर झगड़े शुरू हो गए। तो धर्मांतरण की बातें दब गईं।

स्वामी चिन्मयानन्द जी, गुरु जी गोलवल्कर के संवाद में विश्व हिन्दू सम्मेलन का निर्णय हुआ। विदेश में रहने वाले हिन्दूओं की चिन्ताजनक स्थिति की चर्चा की गई। त्रिनिदाद–टोबैगो में 40 प्रतिशत हिन्दू, हिन्दूओं का दमन होता था। चर्च में शादी करनी पड़ती थी, मन्दिर नहीं थे। उस समय के वहाँ के सांसद शम्भूनाथ कपिलदेव भारत आये। नेहरू जी से मिले, फिर गुरू जी से मिले। दादा साहब आप्टे ने तीन लेख लिखा था, विदेश में रहने वाले हिन्दूओं के बारे में, उसमें समस्याओं के उपाय भी लिखे थे। चिन्मय मिशन में बैठक 29–30 अगस्त 1964, श्रीकृष्ण जन्माष्टम को हुई। जैन, सिख, अकाल तख्त, बौद्ध सभी समुदायों के लोग उपस्थित थे। सब की उपस्थिति में लोगों के सलाह से विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना हो गई। 23–24 जनवरी 1966 में कुम्भ में प्रथम विश्व हिन्दू सम्मेलन कराया गया।

जिन सम्प्रदायों का निर्माण भारत में हुआ, जो सम्प्रदाय भारतीय जीवन मूल्यों को मानते हैं, ऐसे सभी लोगों के लिए विहिप काम करता था। हिन्दू कोड बील में लिखा है कि ईसाई, यहूदी, मुसलमान, पारसी को छोड़कर बाकि सभी लोगों पर लागू होगा, तो इनको छोड़कर बाकि सभी लोग हिन्दू हैं। धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक आधार पर समाज का जागरण करने के लिए विश्व हिन्दू परिषद का काम है। बट वृक्ष अक्षय होता है, वैसा ही अक्षय हिन्दू समज भी, इसीलिए अक्षय बट बोध चिन्ह तय हुआ।

सारे शंकराचार्य एक साथ आये। परावर्तन को मान्यता मिला, राष्ट्रपति राधाकृष्णन का संदेश आया। 1979 में इसी कुम्भ में दूसरा विश्व हिन्दू सम्मेलन हुआ। सर्वे हिन्दू सोदरा, न हिन्दू पतितो भवेत वाक्य तय हुआ। अमेरिका में विहिप के दस सम्मेलन हुए, यूरोप में पाँच हुए। विदेशों में विहिप का 30 देशों में काम है। अभी 80 हजार समितियाँ हैं। दो लाख समितियाँ बनाना है। 10103 प्रखंड में समितियाँ बनाना है। संगठन, सेवा, सँस्कार, सुरक्षा– चार प्रकार के काम हमलोग करते हैं। 32 हजार सत्संग, 2 हजार बाल सँस्कार केन्द्र, 500 से अधिक मन्दिरों का निर्माण हुए हैं।

प्रेषक – अश्वनी मिश्र
प्रांत प्रचार–प्रसार प्रमुख काशी प्रांत

शक्ति समागम : राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका

आज 19 जनवरी, विश्व हिन्दू परिषद शिविर, ओल्ड जी.टी. रोड, झूंसी, सेक्टर 18, कुम्भ मेला क्षेत्र, प्रयागराज में मातृशक्ति–दुर्गावाहिनी लखनऊ, मेरठ क्षेत्र समागम कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अनादिकाल से ही भारतीय महिलाओं ने समाज में प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। वह अपनी ऊर्जा, दूरदर्शिता, उत्साह और दृढ़ संकल्प के बल पर हर चुनौती का सामना करने में सक्षम रही हैं। इन्हीं विचारों को साकार करते हुए प्रयागराज कुंभ में "शक्ति समागम" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को संगठित करना, समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे छुआछूत और भेदभाव को समाप्त करना और समाज में समानता का भाव जागृत करना था। साथ ही, यह कार्यक्रम महिलाओं को आत्मरक्षा के प्रति सक्षम बनाने और हिंदू समाज के जीवन मूल्यों का रक्षण एवं संवर्धन करने पर केंद्रित था। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता साध्वी दीदी माँ ऋतम्भरा जी रही। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दू समाज में शौर्य का बोध जागृत करना समय की आवश्यकता है। जब समाज के हर वर्ग में शक्ति और संकल्प का संचार होता है, तब राष्ट्रनिर्माण की दिशा में ठोस कदम ऊठाये जा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि संकल्प में यदि विकल्प न हो, तो वह सिद्धि की ओर ले जाता है। इसके साथ ही विहिप के केंद्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी ने अपने सम्बोधन में हिन्दू धर्म की जड़ों को पहचानने का आह्वान करते हुए पंचव्रत यथा कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, स्व का बोध, पर्यावरण सुरक्षा और नागरिक कर्तव्य पर बल दिया। इसके लिए उन्होंने अपने विचारों में हिन्दू धर्म और सँस्कृति की गहरी समझ हो, यह वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायाधीश विजयलक्ष्मी जी ने की। कार्यक्रम में मिलिन्द पराण्डे जी केन्द्रीय संगठन महामंत्री, कोटेश्वर शर्मा जी केन्द्रीय संगठन संयुक्त महामंत्री, नीरज दौनेरिया कार्यक्रम में उपस्थित थे। कल्पलता जी (पूर्व कुलपति) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मीनाक्षी ताई, विनायक राव देशपाण्डेय जी केन्द्रीय संगठन सह महामंत्री, प्रज्ञा महाला, मंच पर उपस्थित थे।

इसके अतिरिक्त, अनेक सम्मानित अतिथि जैसे सरोज जी, पिंकी पंवार, दिव्या सिंह, सुभांगी, पुनम पाण्डेय, रचना सिंह, गुड़िया सिंह सहित हजारो मातृशक्तियाँ कार्यक्रम में उपस्थित रही।

प्रयाग में विराट संत सम्मेलन

25 जनवरी, शुक्रवार, 2025। माघ, कृष्ण पक्ष, एकादशी, वि. सं. 2081 को प्रयागराज महाकुंभ में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें देश के प्रमुख संत सम्मिलित हुए। केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल विश्व हिन्दू परिषद की वैधानिक इकाई है। केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के मार्गदर्शन में विश्व हिन्दू परिषद आरम्भ से ही कार्य करता आया है। इस बैठक के उपरान्त आयोजित इस पत्रकार वार्ता में मंच पर उपस्थित आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य संत अवधेशानंद गिरि जी महाराज विहिप के केन्द्रीय अध्यक्ष, श्री आलोक कुमार जी, केन्द्रीय महामंत्री, श्री बजरंग लाल बागड़ा जी ने बताया कि केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के पूज्य संतों ने विश्व भर के हिन्दू समाज की धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ और संकटों के संदर्भ में विचार करते हुए हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया है। जिसमें निम्नलिखित विषय–बिन्दुओं पर सन्तों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

देश भर में हिन्दू मन्दिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने का जागरण अभियान प्रारम्भ हुआ है। आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में एक विराट सभा से इस अभियान का शंखनाद हो चुका है। संतों ने आग्रह किया है कि सभी मन्दिर सरकारी नियंत्रण से मुक्त किये जाएँ, सरकारी नियंत्रण स्थापित करने वाले कानून हटाए जाएँ और मन्दिरों का प्रबंधन आस्था रखने वाले भक्तों को सौंपा जाए।

हिन्दुओं की घटती जन्म दर से देश की हिन्दू जनसँख्या में असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। कारण हिन्दू परिवारों में घटती जन्मदर के साथ विलम्ब से विवाह करना एक महत्त्व कारण है। हिन्दू समाज के अस्तित्वपूर्ण की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण दायित्व के रूप में हर हिन्दू परिवार में कम से कम तीन बच्चों का जन्म होना चाहिए। मार्गदर्शक मण्डल के पूज्य संतों ने आह्वान किया है कि हिन्दू समाज की जनसँख्या को संतुलित बनाये रखने के लिए हिन्दू समाज के जन्मदर को बढ़ाने की आवश्यकता है।

बाँग्लादेश में हिन्दुओं पर लगातार सुनियोजित अत्याचार हो रहा है। भारत में भी कुछ तत्व हिन्दुओं को बाँग्लादेश जैसी परिस्थिति उत्पन्न करने की धमकी दे रहे हैं, विश्व हिन्दू परिषद् के मार्ग दर्शक मंडल ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत में जिस प्रकार से जनसँख्या असंतुलन हुआ है, वह भयावह है। देश में हिन्दुओं को इस सन्दर्भ में गहन चिंतन करना चाहिए। भारत में हिन्दू रोजगार विहीन होता जा रहा है जो अत्यंत चिंता की बात है। देश का प्रत्येक हिन्दू रोजगार युक्त हो इस पर विचार करना आज की बड़ी आवश्यकता है।

वक्फ बोर्ड के निरंकुश व असीमित अधिकारों को नियंत्रित करने के लिए केन्द्र सरकार कानून सुधार अधिनियम लाने वाली है, उसका केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल स्वागत करती है और यह आह्वान करती है कि यह कानून पारित होना चाहिए तथा सभी दलों के सांसदों को इसमें सहयोग करना चाहिए।

1984 के धर्म संसद से लेकर अयोध्या, मथुरा, काशी तीनों मन्दिरों की प्राप्ति के लिए पूज्य संत समाज, हिन्दू समाज, विश्व हिन्दू परिषद तथा संघ भी संकल्प बद्ध था, है और भविष्य में भी रहेगा। भारत के उत्थान के लिए सामाजिक समरसता, पर्यावरण की रक्षा, कुटुम्ब प्रबोधन से हिन्दू सँस्कारों का सिंचन तथा सामाजिक कुप्रथाओं का निर्मूलन, अपने स्व का आत्मबोध तथा अच्छे नागरिकों के कर्तव्य, ये राष्ट्रीय चारित्र्य के विकास के लिए समाज के लिए आवश्यक है। इस बैठक में जिनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उसमें प्रमुख रूप से जगतगुरु शंकराचार्य वासुदेवानन्द सरस्वती जी, आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि जी, आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानन्द जी, महामंडलेश्वर विश्वात्मानन्द भारती जी, महामंडलेश्वर बालकानन्द जी, स्वामी चिदानंद मुनि जी, स्वामी राजेंद्र देवाचार्य जी, स्वामी कौशल्यानन्द गिरि जी, स्वामी अखिलेश्वरानन्द जी, स्वामी हरिहरानन्द जी, श्री महंत निर्मोही अखाड़ा राजेंद्र दास जी, पूज्य महंत रविन्द्र पूरी जी महानिर्वाणी, पूज्य महामंडलेश्वर चूड़ामणि जी भोपाल, पूज्य महामंडलेश्वर जितेंद्रानंदजी महामंत्री, संत समिति, पूज्य परमात्मानंद जी–महामंत्री आचार्य सभा, नामधारी से पूज्य उदय सिंह जी महाराज, पूज्य बालयोगी उमेश्नाथ जी महाराज, महामंडलेश्वर पूज्य आत्मानंद जी नेपाल, पूज्य संग्राम सिंह जी–आन्ध्र प्रदेश, पूज्य केवलानंद जी सरस्वती–आन्ध्र प्रदेश, पूज्य भास्कर गिरि जी–देवगढ़, पूज्य बाबू सिंह जी–बंजारा समाज आदि उपस्थित रहे।

वलसाड जिला (गुजरात) में सामाजिक समरसता अभियान द्वारा 6 दिवसीय सामाजिक समरसता यात्रा' का आयोजन

रोहतास जिले के सासाराम (बिहार) में विश्व हिंदू परिषद की महिला इकाई दुर्गावाहिनी व मातृशक्ति द्वारा मानवंदन यात्रा का आयोजन

भाग्यनगर (तेलंगाणा) में संस्कार प्रशिक्षण अनुभाग द्वारा रामायण परीक्षा का आयोजन

रोटोरूआ न्यूज़ीलैण्ड में हिंदू हेरिटेज सेंटर द्वारा मकर संक्रांति पर (पतंग महोत्सव) का आयोजन

अशोकनगर (म.प्र.) में श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर सामूहिक हनुमान चालीसा

पटना (बिहार) में बजरंग दल द्वारा त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.01.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

राजस्थान सरकार

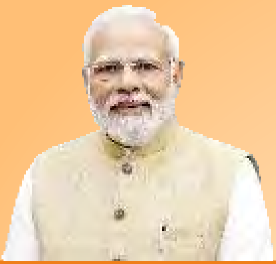

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

महत्वपूर्ण फैसलों से बदलती राजस्थान की तस्वीर

- संशोधित पीकेसी योजना के लिए राजस्थान, मध्य प्रदेश और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू
- शेखावाटी अंचल को बहुप्रतीक्षित यमुना जल उपलब्ध कराने के लिए राजस्थान, हरियाणा और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू
- ऊर्जा क्षेत्र में केंद्रीय पीएसयू के साथ 2.24 लाख करोड़ के एमओयू
- प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 38,447 आवास पूर्ण 1 लाख 55 हजार नए आवासों की स्वीकृति
- पीएम-सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में 20 हजार रूफटॉप सोलर संयत्र स्थापित
- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में 30,297 आवास पूर्ण, 30,408 नए आवासों की स्वीकृति
- लगभग 96 हजार कृषि कनेक्शन और 4 लाख 64 हजार घरेलू विद्युत कनेक्शन जारी
- श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना के तहत 8 रूपये में भरपेट भोजन, प्रति थाली सरकार की तरफ से 22 रुपये का अनुदान
- किसान सम्मान निधि में 70 लाख से अधिक कृषकों को 5500 करोड़ रुपये से अधिक राशि हस्तान्तरित
- लगभग 26 हजार सोलर पम्प सेट की स्थापना के लिए लगभग 400 करोड़ रुपये का अनुदान
- मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं मा वाउचर योजना प्रारम्भ
- 5 नये मेडिकल कॉलेज बारां, बांसवाड़ा, नागौर, झुन्झुनूं एवं सवाई माधोपुर में प्रारम्भ
- राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेन्ट समिट 2024 में लगभग 35 लाख करोड़ रुपये के एम.ओ.यू.
- मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान के तहत 7 करोड़ से अधिक पौधे रोपित
- सड़क निर्माण पर लगभग 15000 करोड़ रुपये व्यय
- 43000 से अधिक पदों पर नियुक्तियां
- 10.22 लाख ग्रामीण परिवारों को नल से जल, 5257 करोड़ रुपये व्यय
- एमजेएसए 2.0 में 5000 गाँवों में 1 लाख वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर्स कार्य

राजस्थान संवाद

दस नवीन नीतियां

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना	राजस्थान मिनरल पॉलिसी	राजस्थान एम-सेण्ड पॉलिसी	राजस्थान एमएसएमई पॉलिसी	इंटीग्रेटेड क्लीन एनर्जी पॉलिसी
राजस्थान एवीजीसी-एक्सआर पॉलिसी	राजस्थान एक जिला-एक उत्पाद नीति	इंटीग्रेटेड क्लस्टर डवलपमेंट स्कीम	राजस्थान एक्सपोर्ट प्रमोशन पॉलिसी	राजस्थान ट्यूरिज्म यूनिट पॉलिसी

निभाई जिम्मेदारी, हर घर खुशहाली

R.O.No.: Samwad/D/584/2024-2025

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी